प्रकाशक
अ० वा० सहस्रबुद्धे,
मंत्री, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ,
वर्धा (म० प्र०)

दूसरी बार २०,०००
कुल छपी प्रतियाँ २५,०००
अगस्त, १९५५
मूल्य ~~चार आना~~ छह आना

मुद्रक
विद्यामन्दिर प्रेस लि०
मानमन्दिर,
बनारस

अनुक्रम

पावन-प्रसंग

: १ :

गंगोत्तरी

रामनवमी के दिन तेलगाना की यात्रा प्रारम्भ हुई। तारीख थी, १३ अप्रैल। ता० १८ को पोचमपल्ली मे पड़ाव था। नलगुडा जिले का पहला स्थान। कम्युनिस्ट-आन्दोलन का अड्डा। हत्याएँ, लूट आदि से गाँव अछूता नही रहा था।

ग्रामवासियो ने विनोबाजी का बड़ा भाव-भरा स्वागत किया। चदन-तिलक, पुष्प-मालाएँ, पुरुषसूक्त, श्रीफल-समर्पण आदि सब विधिवत् हुआ।

विनोबाजी ग्राम-प्रदक्षिणा के लिए निकले। शुरू में हरिजन-बस्ती मे ही गये। मकानों के भीतर घुसे। नवजात शिशु को गोद ले लिया। मरीजो की हालत देखी। खाने-पीने का सामान देखा। सारी बस्ती साथ हो गयी थी।

जब लौटने लगे तो लोगो ने प्रार्थना की .

"आपने मकानो की हालत तो देखी। परिवार बहुत ज्यादा है। जगह बहुत कम है। मकानों के लिए थोड़ी और जगह पड़ोस मे मिलनी चाहिए।"

पास में ही जमीन तो थी, मिलने की सभावना भी थी। विनोबा कुछ सोचने लगे और आगे बढे।

लोग आशा मे पीछे-पीछे हो लिये।

विनोबाजी के साथ डेरे तक चले आये। डेरे पर और ग्रामवासी भी जुटे थे। विनोबाजी ने अपने आसन पर बैठते हुए हरिजन भाइयो से पूछा

"क्यो, और कुछ कहना है?"

"जी।"

"कहो।"

"हम लोगो के पास सिवा मजदूरी के कोई धधा नही है। मजदूरी का मिलना मालिक की मर्जी पर रहता है। जिस दिन काम नही मिलता उस दिन फाका करना पडता है। हमे खेती के लिए भी अगर कुछ जमीन मिल सके तो ठीक होगा। इज्जत की रोटी कमा सकेगे।"

"कितने परिवार है?"

"तीस।"

"जमीन कितनी चाहिए?"

लोग आपस मे विचार करने लगे।

मुखिया ने कहा, "अस्सी एकड काफी होगी। फिर कुछ मजदूरी भी कर लेंगे।"

एक भाई ने बताया, "यहाँ सरकारी जमीन तो काफी है।"

"अच्छा, आप लोग एक दरख्वास्त तो लिख दीजिये। सरकार के पास भेजकर देखेंगे।"

शायद सोचने लगे, अरजी पर विचार कब होगा—इन लोगो को जमीन कब मिलेगी और तब तक इन लोगों का क्या होगा ?

सहसा उन्होने पूछा, "क्या यहाँ कोई भूमिवान भाई नही है ?" और जवाब की राह देखे बिना आगे कहना जारी रखा, "आखिर ये लोग भी हमारे भाई ही है। आपमे से कोई इनकी माँग पूरी कर सकते है ?"

सभा मे क्षण भर पूर्ण शान्ति छा गयी।

फिर एक भाई ने उठकर नम्रतापूर्वक निवेदन किया, "विनोबाजी, अपने पिताजी की स्मृति मे मै सौ एकड़ अर्पित करना चाहता हूँ। स्वीकार कीजिये।"

श्री रामचन्द्र रेड्डी ने सौ एकड़ के दान का सकल्प-पत्र विनोबाजी के नाम लिख दिया।

दो गवाहो ने गवाही भी कर दी।

पाँच आदमियो की एक कमेटी उस जमीन की व्यवस्था के लिए नियुक्त हो गयी।

इस प्रकार भूदान की गगोत्तरी प्रकट हुई।

: २ :

भीम-जरासंध, राम-लक्ष्मण बन गये

तगपल्ली गाँव तो छोटा-सा है, पर वहाँ झगडा मोटा था। मूल झगडा था दो भाइयो के बीच। इन दोनो का झगड़ा सारे गाँव मे फैल गया और गाँव मे दो दल बन गये। एक पक्षवाले दूसरे पक्षवालो का मुँह देखना भी पसन्द नही करते थे। कितनो को तो गाँव ही छोड जाना पडा। दो मे से एक भाई यही रहते थे, पर दूसरे भाई गाँव छोडकर चले गये थे। आज विनोबाजी के कारण ही आये, क्योकि उन्हीके घर हमारा डेरा रखना तय हुआ था।

विनोवा ने गाँववालो से पूछा, "तुम्हारे गाँव की क्या कठिनाई है ?"

गाँववालो ने कहा, "यह झगडा ही हमें खा रहा है। यह मिटे तो हम सुखी हो।"

विनोवा ने दोनो भाइयो को प्रेम से समझाया। दोनो अपनी भूल समझ गये। वर्षो के वाद दोनो ने शाम को सहयात्रियो की पक्ति मे बैठकर एक साथ भोजन किया और प्रार्थना-सभा मे दोनो भाई गले मिले। दोनो की आँखो मे हर्ष और पश्चात्ताप के आँसू थे। भीम-जरासध की तरह रहनेवाले दोनो भाई उस दिन से राम-लक्ष्मण वन गये।

दोनो ने पर्याप्त भूदान भी दिया।

: ३ :

छठा बेटा

भूदान की गगा धीमे-धीमे आगे बढती जा रही थी। एक छोटे देहात मे बाबा किसान भाइयो से तेलुगु मे ही चर्चा कर रहे थे। एक भाई से पूछा, "आपके पास कितनी जमीन है ?"

जवाब मिला, "केवल नौ बीघा।"

बाबा ने पूछा, "यज्ञ में आपने आहुति अर्पण की है या नही ?"

उसने हँसकर कहा, "महाराज, मेरे पाँच बेटे है, हर एक के हिस्से मे मुश्किल से दो बीघा जमीन आती है। आपको क्या दूँ ?"

बाबा ने कहा, "भगवान् की कृपा है कि आपके पाँच बेटे है। अगर परमेश्वर की कृपा से छठा बेटा और पैदा हो जाय, तो क्या आप उससे कहेगे, 'बेटा, तू देर से आया, अब तेरे लिए जमीन नही है, जमीन पहले ही बँट चुकी है, तू अब जा'।"

प्रश्न हृदय को छू गया। हाथ जोडकर कहा, "नहीं महाराज, उसे तो देना ही होगा।"

तब बाबा ने कहा, "समझ लो, मै ही तुम्हारा छठा बेटा पैदा हो गया हूँ। मुझे मेरा हिस्सा दो।"

उस किसान ने थोड़ी देर बाबा का चेहरा निहारा और उसमे उसने अपना बेटा पाया या साक्षात् परमेश्वर के दर्शन किये, पता नही, पर छठा हिस्सा लिख दिया ।

: ४

मेरा दान-पत्र भी भर देना था

नलगुडा जिले का अतिम पडाव सूर्यपेठ । कार्य-कर्ताओ की सभा थी । जिले के काफी कार्यकर्ता आ पहुँचे थे ।

भूदान की गगा का प्रारम्भ ही था । अपना अनुभव वताते हुए विनोवाजी ने कहा, "मै देखता हूँ कि जब तक कार्यकर्ता अपना हिस्सा नही देगा, वह जमीन माँग नही सकेगा ।"

कार्यकर्ता सोचने लगे । जमीन तो वहुतो के पास थी । परन्तु कौन पहले उठे !

श्री कोदडराम रेड्डी यात्रा के प्रारम्भ से हमारे सहयात्री थे । नलगुडा जिले के ही रहनेवाले दो भाई, दोनो सयुक्त परिवार मे एकत्र रहते थे । दोनो की मिलकर चार सौ वीघा जमीन थी । दूसरे भाई भी आज आनेवाले थे, परन्तु पहुँच नही पाये थे । वे ही वडे थे ।

कोदड रेड्डी उठे ।

"हम दो भाई ह । मरे हिस्स में दो सौ एकड जमीन आती है। पूज्य विनोबाजी को भूदान-यज्ञ मे आधा हिस्सा—सौ एकड अर्पण करता हूँ ."

तालियो की वर्षा हुई ।

एक-एक करके कार्यकर्ता उठने लगे । दान-पत्र भरे जाने लगे ।

शाम को कोदड रेड्डी के बडे भाई भी आ पहुँचे । विनोबा के दरबार मे शिकायत पेश हुई : "हम दोनों अब तक एक साथ रहे। कभी किसी बात मे भेद नही किया । आज कोदड रेड्डी ने भेद किया । भूदान-यज्ञ मे केवल अपने ही हिस्से की जमीन दी । यदि पूरी जमीन मे से आधी देता तो क्या मै मना करता ?" और यह कहते-कहते उनका कंठ भर आया । अपने हिस्से की सौ एकड भूमि का एक और दान-पत्र उन्होने भर दिया ।

श्री कोदड रेड्डी, जो शुरू से बाबा के साथ हुए, अब तक बराबर साथ दे रहे है । उनकी पत्नी का स्वास्थ्य अत्यधिक खराब रहता है, परन्तु उन्हे भूदान की चिन्ता लगी है। हजारो एकड़ जमीन का उन्होने बँटवारा किया और नयी जमीन भी बहुत प्राप्त की । हैदराबाद के कांग्रेसी मित्रो ने बहुत आग्रह किया, फिर भी वे चुनाव मे खडे नही हुए ।

एक बीघे की सीख

सूर्यपेठ की ही वात है । शाम की सभा खूब जमी थी । वहनें भी काफी सख्या में आयी थी । दोपहर में महिलाओ की अलग सभा भी हुई थी । उसमें भूदान का विचार सरल भाषा मे समझाया गया । एक वहन घर छोडकर अधिक समय नही रह सकती थी । बाबा का भाषण सुनने की उसकी इच्छा तो तीव्र थी, परन्तु घर पर छोटे बच्चे थे । वह बहन सभा पूरी होने के वाद घर चली गयी थी । सबेरे बाबा जब रवाना हो रहे थे, तो वह दौडी-दौडी आयी और बोली, "वावाजी, मेरे पास केवल दो बीघा जमीन है । एक बीघा भू-दान मे देने आयी हूँ ।" और साथ में उसने एक गाय भी अर्पण की ।

वावा कई वार इसका जिक्र करते है और कहते है, "एक वहन दौडकर आती है । दो वीघे मे से एक वीघा जमीन देकर चली जाती है । क्या आप समझते है कि अव वडे लोग चुप रहेगे ? छोटो का त्याग उनसे भी दिलवायेगा ही ।"

: ६ :

सुरगाँव की शुभकामना

प्रधान मत्री के निमन्त्रण पर विनोबा ने दिल्ली जाना तय किया। जाने से एक दिन पूर्व वे सुरगाँव के लोगों से मिलने गये।

"मै दिल्ली जा रहा हूँ। रास्ते मे जमीन माँगता हुआ जाऊँगा। आप लोगों के बीच मे इतने रोज रहा। लोग मुझसे पूछेंगे, सुरगाँव से कितनी जमीन मिली? क्या जवाब दूँगा? मेरी माँग छठे हिस्से की है।"

सुरगाँव की सारी जमीन बहुत उपजाऊ है। लोगो ने उस पर बड़ा परिश्रम किया है। केले तथा अन्य फलो के कितने ही बगीचे हैं। विनोबा की माँग पर ग्रामवासियों ने अपने गाँव का हिस्सा साठ एकड देकर बिदा किया। शुभास्ते पंथान. सन्तु!

: ७ :

मैं अधूरा प्रेम नहीं कर सकता

दिल्ली की यात्रा किसी महान् भावी क्रांति की सूचक थी। इसलिए वर्धा से चलते समय एक से एक पावन संकेत होते गये।

श्री दत्तोबा दास्ताने विनोबाजी के निकट के आश्रम-वासी है। कितने ही दिनो तक उन्होने उनके सचिव का भी काम वहुत योग्यतापूर्वक सॅभाला है। बडा परिवार है— पत्नी है, तीन बालक है और पिताजी बापू के पुराने सहकारी है। उनकी अपनी अठारह एकड भूमि थी। उसकी पैदावार से गृहस्थी को काफी सहारा मिल जाता था। विनोबाजी दिल्ली के लिए विदा होने लगे तो दत्तोबाजी ने अपनी अठारह एकड भूमि का दान-पत्र विनोबा के चरणो पर धर दिया।

आश्रमवासियो मे से एक वुजुर्ग अभिभावक ने कहा, "ये अपनी सारी-की-सारी जमीन दे रहे है। आप कुछ जमीन स्वीकार कर ले। शेप इनके लिए छोडना ठीक रहेगा।"

विनोवाजी ने तत्क्षण और सहज भाव से उत्तर दिया— "दत्तोवा छोटे से वडे मेरे ही पास हुए है। मै उन पर अधूरा प्रेम नही कर सकता।" और उस पूरी जमीन का दानपत्र उन्होने स्वीकार कर लिया।

८ :

पठान की प्रतिज्ञा

नागपुर जाते हुए वीच मे रास्ते से दूर गुमगाँव पडता है। मोहम्मद पठान गुमगॉव के पुराने कॉंग्रेसी कार्यकर्ता है। जेल मे विनोवाजी के पास कुरानशरीफ भी पढते थे। जव

सुना कि विनोबा की दिल्ली-यात्रा मे गुमगाँव का नाम नहीं है तो पवनार आये और यात्रा मे गुमगाँव को जोड़ने का आग्रह करने लगे ।

"दरिद्रनारायण की फीस दिलानी होगी, पठान साहब !" विनोबा ने विनोद किया ।

"सारे गाँव की तरफ से कुछ कहना मेरी ताकत के बाहर है । पर अगर गाँववालो ने अपना हिस्सा नही दिया तो मै अपनी पूरी जमीन अर्पण कर दूँगा ।"

गुमगाँव की सभा में उस दिन पठान साहब ने ललकारा, "मै तो विनोबा से वचन-बद्ध हूँ । दरिद्रनारायण की झोली मे आप लोग अपना भूभाग दे, न दे, मै तो अपनी जमीन अर्पण करने का वादा कर चुका हूँ। मुझे आशा है कि सत्याग्रह-आन्दोलन मे जो गुमगाँव अग्रणी रहा, वह भूदान में भी नही पिछडेगा ।"

और, एक-डेढ घटे तक भूदान की वर्षा होती रही । सैकडो ने दिया । वह सारा दृश्य वडा ही हृदयस्पर्शी था ।

: ६ :

बच्चों को आलसी नहीं बनाना चाहता

सागर जिले का आखिरी पड़ाव । रास्ते में एक गाँव मे ग्रामवासियो ने रोका । सभा हुई । विनोबा ने भूदान का

विचार समझाया। कुछ दान-पत्र पहले से जमा थे। वे अर्पित किये गये।

एक वृद्ध सज्जन उठे, "अपनी छह एकड भूमि सारी-की-सारी अर्पण करना चाहता हूँ। स्वीकार हो।"

विनोवा ने कुछ जानकारी हासिल करना उचित समझा।

"फिर आप क्या करेंगे ?"

"मै राज हूँ। मजदूरी करके पेट भरता हूँ। उसीमें से वचाकर जमीन खरीदी थी।"

"लडके-वच्चे होगे न ?"

"जी, तीन है।"

"उनके लिए कुछ नही रखियेगा ?"

"मुझे उन्हे आलसी नही वनाना है। मै सब सोच-समझकर दे रहा हूँ। स्वीकार किया जाय।"

इस स्वय-स्फूर्त दान को और उसके दाता को लोग निहारते ही रह गये।

१०

वावाजी ने भी

जिस दिन से विनोवाजी ने उत्तर प्रदेश मे प्रवेश किया, वावा राघवदासजी भी भूदान-आन्दोलन मे तद्रूप हो गये है। मानो उनकी उसमे सहज समाधि लग गयी है।

उस समय वे उत्तर प्रदेश की विधान-सभा के सदस्य भी थे। लोगो के पास जमीन माँगने जाते तो झोली भर-भरकर ले आते। कोई बाबाजी से यह नही पूछता था कि आपने कितनी दी, क्योकि सभी जानते थे कि बाबाजी के पास सिवा विभूति के और क्या हो सकता है !

परतु बाबाजी को अखरने लगा। विधान-सभा से कुछ रकम मिलती थी। उसीमे से कुछ रुपया बचाकर उन्होने जमीन खरीद ली और भूदान-यज्ञ मे अपना हविर्भाग भी अर्पित किया।

उनके इस उदाहरण ने औरो को भी प्रेरणा दी। भूदान-आन्दोलन के बाबाजी प्रमुख स्तभ है। पुरी-सम्मेलन के बाद भूमि-क्रान्ति को सफल बनाने के लिए वे १९५७ तक अखंड पद-यात्रा के सकल्प से निकल पड़े है।

: ११ :

चिरगाँव का सत्संग

आज चिरगाँव मे डेरा था। दो मील दूर तक श्रद्धेय दद्दा* सैकड़ो पुरवासियो को साथ लिये बाबा को लिवा लेने आये थे। समूह मे सुश्री महादेवी वर्मा तथा कविवर 'दिनकर' भी थे।

रास्ते भर कीर्तन-भजन का अद्भुत आनन्द रहा।

---

* श्री मैथिलीशरणजी गुप्त

द्वार पर जलकलश, तिलक, आरती, श्रीफल आदि सभी विधिवत् हुआ। भूमि का षष्ठांश भी समर्पित किया गया। विनोबाजी ने ऊपर अपने कमरे मे पहुँचते ही श्री सियारामशरणजी को भी अपने पास बुला लिया और फिर उनका हिंदी गीता-अनुवाद लेकर बैठ गये।

स्थितप्रज्ञ के श्लोक एक-एक करके बारीकी से देखने लगे। एक घंटे तक उन अठारह श्लोको पर विचार-विनिमय हुआ।

सायकाल प्रार्थना में नित्य की भांति सस्कृत के ही श्लोक पढे गये। प्रार्थना समाप्त हुई।

विनोबा अब प्रवचन शुरू करेंगे, इस आशा से लोग ध्यानपूर्वक उनकी ओर निहारने लगे। किंतु प्रवचन शुरू करने से पहले विनोबा ने गीतानुवाद में से स्थितप्रज्ञ के उन अठारह श्लोको का पाठ सुनाया और दूसरे रोज की प्रार्थना मे भी वे हिंदी श्लोक ही गाये गये। तब से भारत भर मे जहाँ हिंदी जाननेवाले होते है, अक्सर वे ही श्लोक गाये जाते है।

सभा शुरू होने के पहले दद्दा ने भूदान-यज्ञ के पुरोहित के स्वागत मे लिखी गयी अपनी विशेष रचना भी पढ सुनायी, लेकिन इतने से दद्दा को सतोष कहां ?

भूदान-विषयक गीतो का एक नूतन सग्रह ही उन्होने प्रकाशित करवा दिया और उसकी सारी आय भी उन्होने सपत्तिदान मे अर्पित कर दी।

: १२ :

गाँव की लाज

चिरगाँव से ६ मील !

गाँव का नाम था बड़ागाँव । पर यथार्थ में वह बड़ा नही था । सभा मे पास-पड़ोस के देहातो से लोग आ गये थे । दान-पत्र भी मिला, पर इस गाँव के एक भी काश्तकार ने दान नही दिया । बाबा ने कहा, "मेरा पूरा दिन यहाँ बीत गया, पर इस गाँव से मुझे खाली हाथ लौटना पड़ रहा है । खैर ! मेरा विश्वास है कि आपने आज नही दिया, तो आप आगे जरूर देनेवाले है ।"

साँझ हो गयी थी । एक चमार दौड़ता हुआ आया और कहने लगा, "आज मेरे गाँव में ऋषि पधारे है । खाली हाथ लौटें, यह मै नही देख सकता । मेरे पास जो भी थोड़ा-सा है, वह सब अर्पण करता हूँ ।" उसने नजराना भरकर अभी-अभी भूमिधर के अधिकार प्राप्त किये थे । अपना अधिकार-पत्र और दान-पत्र अर्पण करके वह चला गया । गाँव की लाज उसने रखी । ऋषि को खाली हाथ लौटने नही दिया ।

१३

चौथे और बड़े भाई का भाग

आगरा मे एक 'शिरोमणि' परिवार है। बाबा का प्रवचन जमुना के किनारे हुआ। बाबा ने कहा, "तीन भाई है, तो मुझे चौथा भाई मानिये। चार है, तो पाँचवाँ मानिये और मेरा हिस्सा दीजिये।"

शाम को तीनो भाई माँ के पास बैठे। विनोबा की बात सुनायी। उन्नीस सौ बीघा जमीन थी। माँ ने कहा, "बाबा ठीक तो कहते है बेटा! उन्हे चौथा और बडे भाई का भाग मिलना चाहिए। तीनो भाई बाबा को पाँच सौ एकड का दान-पत्र दे आये और बाबा के स्नेह-बन्धन मे बंध गये।

१४

हमारा तो बिना जमीन के ही चल जाता है

दिल्ली के पहले गाजियाबाद मे मुकाम था। यहाँ की सभा बडी अच्छी रही। दान भी ठीक-ठीक मिला। रात को बाबा अपने स्वाध्याय मे लग गये थे कि एक बहन आयी। बाबा का दरबार तो सबके लिए खुला रहता है। उस बहन ने बाबा को प्रणाम किया और कहा, "मेरे पति वकील है।

वकीली से हमारा निर्वाह अच्छी तरह चल जाता है। ग्यारह एकड़ जमीन हमारे पास है। कभी काम आवेगी, यह सोचकर इकट्ठी कर रखी थी, पर उसके बिना भी हमारा चल जाता है। हमारी आपसे प्रार्थना है कि आप हमारा यह ग्यारह एकड़ का दान स्वीकार करे।"

'गीता-प्रवचन' का प्रसाद लेकर वह बहन लौट गयी।

: १५ :

राष्ट्रपति का आशीर्वाद

राजघाट पर विनोबाजी की वह पहली सभा थी। राष्ट्रपति ने विनोबाजी का स्वागत किया। मानो सारे राष्ट्र की ओर से ही था वह स्वागत! फिर अपनी ओर से राष्ट्रपति ने भी भूदान-यज्ञ मे आहुति अर्पण की। उन्होने नम्रतापूर्वक घोषणा की, "विनोबाजी, मेरी अपनी जमीन तो अब शायद ही हो, परन्तु लड़को के पास है। आप उसमे से जितनी और जैसी जमीन आवश्यक समझे, स्वीकार करने की कृपा करे।"

क्या यह आशीर्वाद सारे राष्ट्र की ओर से नही था?

केवल चौथे भाग का स्वीकार

राजघाट पर विनोबाजी से मिलने के लिए मध्य-प्रदेश से एक गृहस्थ श्री पालीवालजी अपनी सहधर्मिणी के साथ आ पहुँचे ।

अपनी सारी जमीन अडतालीस एकड का दान-पत्र उन्होने विनोबाजी को अर्पण कर दिया । सबधित सारे कागजात, नक्शे वगैरह सब लेते आये थे ।

विनोबाजी ने उनकी पत्नी को बुलाकर पूछा, तो उस दवी ने भी अपनी सहमति प्रकट की ।

"आपके कितनी सताने है ?" विनोबाजी ने पूछा ।

"तीन लडके है ।"

"निर्वाह का साधन जमीन के सिवा भी कुछ है ?"

"जी नही ।"

"तो मुझे चौथा हिस्सा, बारह एकड का दान-पत्र लिख दीजिये । बाकी का आप प्रसादरूप ले लीजिये ।"

इस दपति ने वह प्रसाद ग्रहण किया और बाबा के आशीर्वाद के साथ विदा ली ।

: १७ :

सर्वस्व समर्पण

करहल एक छोटा-सा गाँव है। यहाँ का कार्यक्रम एकाएक तय हो गया था। यहाँ एक भाई ने अपनी सारी जमीन याने चार एकड दे दी। उससे प्रेरणा पाकर एक ने, जो पाँच एकड का इरादा कर रहा था, दस एकड़ जमीन दे दी। दूसरे ने ग्यारह का इरादा किया था, किन्तु बीस एकड़ दे दी। शाम को भोजन से लौटते समय एक भाई मिले। वे प्रवचन में नही आ सके थे, परन्तु दान देने का इरादा था। अपनी दूकान वढाकर (बन्द करके) घर लौट रहे थे। हम लोग उनकी दूकान पर पहुँचे। अत्यन्त श्रद्धापूर्वक बही-खाता निकालकर जमीन की विगतें बतायी और अपनी सारी-की-सारी दस एकड जमीन का दान-पत्र भर दिया। इस छोटे से गाँव में ६०-६२ एकड़ जमीन मिल गयी।

: १८ :

दाता को 'प्रसाद'

इटावा जिला-बोर्ड के अध्यक्ष ठाकुर रघुनाथ सिंह सारे जिले मे हमारे साथ रहे। गांधी-पुण्य-दिवस पर इटावा में विनोबा का प्रार्थना-प्रवचन जब समाप्त हुआ तो रघुनाथ

सिह बोलने के लिए खड़े अवश्य हो गये, पर बोल बड़ी मुश्किल से पाये। आँखो से धारा बहने लगी, "विनोबाजी! हम दो भाई है। दस एकड जमीन है। वह सारी आपको अर्पित है। हमारे उदर-निर्वाह के लिए आप जितनी उचित समझे, हमें प्रसादस्वरूप दे दे।"

: १९ :

हृदय-परिवर्तन

धीरे-धीरे हर विचार के लोग भूदान के विचार को मानने लगे है। समाजवादी और काग्रेसी भाई सहयोग दे रहे है। कुछ ने तो कहा भी कि विनोवाजी, आप तो हमारा ही काम कर रहे हैं।

वलिया जिले मे कम्युनिस्ट मित्रो ने पू० विनोवाजी से सवाल-जवाव किये। आजमगढ मे उन्होने एक मानपत्र मे कहा कि हम आपके मार्ग से सहमत तो नही है, परन्तु आप अपने प्रयोग को आजमा ले, हम रुकावट नही पैदा करेगे।

मैनपुरी जिले मे एक कदम आगे और वढाया। कलेवा (जलपान) के लिए वावा एक देहात मे रुके थे। जिले के कम्युनिस्ट नेता वावूलालजी पालीवाल अपने देहाती मित्रो के साथ वावा के दर्शन के लिए पहुँच गये। वडी ही नम्रता-

पूर्वक उन्होने अपना दो एकड़ का दानपत्र भरवाने की प्रार्थना की और आगे सहयोग देने का आश्वासन भी दिया।

इस तरह विरोध और मान-पत्र के बाद कम्युनिस्ट मित्रों ने दान-पत्र भी दिये।

: २० :

दक्षिण की पहली भेट

पत्र, तार आदि से भी अब दान-पत्र आने लगे हैं। बंगलोर के एक मुसलमान भाई जनाब सैयद हुसेन ने अपनी एक हजार एकड जमीन का दान-पत्र पूज्य राजेन्द्र बाबू के पास उनके जन्मदिन के अवसर पर यह कहकर भेज दिया कि विनोबाजी को उत्तर-भारत में ही जमीन मिल रही है, दक्षिण के भूदान का आरम्भ करने की दृष्टि से मेरी यह भेट विनोबाजी स्वीकार करे।

: २१ :

पंजाब का प्रायश्चित्त

एक रोज दोपहर के समय एक भाई को लेकर जलेश्वर-जी कमरे में आये। उस अत्यन्त नम्र व्यक्ति ने एक दस्तावेज

विनोबा के सामने रखा। दो सौ एकड भूमि का वह दान-पत्र था। ये भाई हिसार से यहाँ भूदान देने आये थे।

"मै चाहता हूँ कि आप पजाव आये। दस हजार एकड भूमि आपकी सेवा मे देना चाहता हूँ। परन्तु इसके पहले कि मै किसीसे भूदान माँगने जाऊँ, मुझे अपनी ओर से भी कुछ हविर्भाग देना चाहिए। एक माह पूर्व ही यह जमीन मिली है। मै इसे किसी अच्छे काम मे लगाने की चिन्ता मे था। बहुत सोचने पर मै इस नतीजे पर पहुँचा कि भू-दान के सिवा और अच्छा उपयोग कोई नही हो सकता, इसलिए यह सारी जमीन आपको देने आया हूँ।"

पजाब-सरकार ने पश्चिमी पजाव से पूर्वी पजाव मे आये हुए निर्वासित हरिजन भाइयो के लिए जमीन देने का वादा श्रीमती रामेश्वरी देवी नेहरू के पास तथा पू० विनोवा-जी के पास किया था। फेहरिस्ते वनी थी। राजघाट पर विनोबाजी ने पजाव-सरकार का अभिनन्दन भी किया था। परन्तु, कारणवश पजाब-सरकार उस वचन को पूरा नही कर सकी। वह घाव रामेश्वरीजी तथा विनोबाजी दोनो के हृदय मे गहरा था; परन्तु, विनोबाजी की श्रद्धा थी कि भगवान् मार्ग निकालेगा।

पजाब के इस भाई ने भले ही इसमे पजाव-सरकार के उस वचन की पूर्ति का अशमात्र ही क्यो न हो, आज मानो प्रायश्चित्त भी कर दिया।

: २२ :

दो बीघा दो लाख के समान

बरहज जाते हुए उस रोज विनोबा हमारे सहयात्री श्री हरीश भाई के गाँव में पाँच मिनट के लिए रुके। गाँव की स्त्रियो ने मंगलगीत गाये। आरती की। हरीश भाई की माताजी आगे आयी। प्रणाम किया। कुछ कहना चाहती थी, लेकिन उनका कठ भर आया। बाबा ने पूछा, "क्यों, कुछ कहना है ?"

तब वे बोली, "कुल बारह बीघा जमीन है। घर में पांच लोग है। आप छठे हुए, दो बीघा स्वीकार करने की कृपा करे।"

शाम को प्रार्थना-प्रवचन में विनोबा ने कहा, "मेरे लिए ये दो बीघे दो लाख बीघे के समान है। यह उस माता का आशीर्वाद है, मेरे इस काम के लिए।"

: २३ :

माँगत आवै लाज

गोरखपुर से आगे के पड़ाव पर जाते समय हमारी सामान की गाड़ी के साथ एक हरिजन भाई चल रहे थे। वे हमारी गाड़ी के पथ-प्रदर्शक थे। बहुत संकोच से उन्होंने एक भाई से पूछा, "क्या मै भी कुछ भूमि-दान कर सकता

हूँ ? मेरे घर बारह आदमी हैं। पाँच बीघा जमीन है। बिना मजदूरी किये तो इतने लोगो का निर्वाह हो नही सकता। तो लगता है कि मै भी दूं। पर एक-दो बीघा देने मे सकोच होता है कि इतना कम क्या दूं। कुछ सूझता नही। आप सलाह दीजिये।"

वे क्या जवाव देते ? उनका मस्तक उसके चरणो में झुक गया। यह है उदार, सहज तपस्वी महान् भारत ! उस भाई के सतोप के लिए चन्द डिसमल जमीन विनोबाजी ने स्वीकार कर ली।

और उस गाडीवान के साथ भोजन के समय जब उन भाई ने इस पथ-प्रदर्शक के महान् दान की वात की तो उन्होने कहा, "मै भी दान-पत्र लिखाऊँगा।" उसने भी अपने प्रेम-प्रतीक के रूप में अपनी एक एकड मे से एक डिसमल जमीन लिखा दी।

२४

तेरा तुझको सौंपता

फरेंदा मे हमारे कुमार सहयात्री गौतम बजाज मंगरू नामक एक भाई को विनोबाजी के पास ले आये। विनोबा के कमरे मे मिलनेवालो की भीड लगी थी। कोई जमीदार थे, कोई धनवान थे, कोई मिल-मालिक थे। गौतम भैया

ने शिकायत की, "बाबा, इस भाई के पास केवल इक्कीस डिसमल जमीन है। बहुत समझाने पर भी नही मानते और सब-की-सब देना चाहते है।" सर्वस्व-समर्पण करने-वाले अपने इस महान् दाता की ओर विनोबा ने कृतज्ञता-भरी प्रसाद-मुद्रा से देखा। उस भाई ने विनोबा के चरण पकड़ लिये। कहा, "महात्माजी, मेरी यह तुच्छ भेंट स्वीकार कर लीजिये।"

बाबा ने कहा, "फिर तुम्हारे लिए तो कुछ भी नही रहेगा।"

उसने कहा, "आखिर मुझे कारखाने की नौकरी तो करनी ही पड़ती है। इतनी जमीन से मेरा निर्वाह नही होता। घर मे पाँच-सात आदमी हैं।"

"तुम देना चाहते हो, यह तो बहुत अच्छी बात है, पर यह तुम्हारे पास ही रहने दो।" वह नही माना, विनोबा ने आग्रह किया तो रोने लगा। आखिर विनोबा ने दान स्वीकार किया और उस पर लिख दिया : "इस मनुष्य के घर की हालत देखते हुए यह जमीन इन्हे प्रसाद-रूप वापस देनी है। इनके आग्रह से इनके समाधानार्थ हमने ली है।"

मगरू ने गद्‌गद हृदय से उस प्रसाद को ग्रहण किया। पुनः चरणो मे माथा टेका। उसकी प्रसाद-मुद्रा से सारा वातावरण आलोकित हो गया।

२६ .

कोई बे-जमीन नहीं रहा

जौनपुर जिले मे एक पडाव पर एक नया अनुभव हुआ । हमारे पडाव से चार मील दूर टिकारडी नामक एक गाँव था । विनोवाजी तो वहाँ गये नही थे, पर कार्यकर्ताओ ने विनोवा-जी का विचार उन लोगो को समझाया था ।

बत्तीस घरो के उस गाँव मे बीस तो जमीनवाले थे और बारह बे-जमीन । अपने बे-जमीन भाइयो को जमीन देने की बात जब उन्हे समझायी गयी तो जमीनवालो ने मिलकर गाँव के बे-जमीनो के लिए सैंतीस एकड जमीन इकट्ठी कर दी । अब उस गाँव मे कोई भी बे-जमीन नही है ।

जुलूस बनाकर वे विनोवाजी से मिलने आये । विनोबा-जी को उन लोगो से कुछ कहना नही पडा । कार्यकर्ता ठीक ढग से विचार समझाये तो क्या हो सकता है, इसका यह एक उदाहरण है ।

२७ :

सुदामा के तंदुल

रात के साढे आठ बज गये थे । विश्राम की तैयारी थी कि इतने मे एक किसान हाँफता हुआ विनोबा के पास पहुँचा ।

सकुचाता हुआ वह झुक गया। विनोबा ने उसकी ओर देखा। तब दोनों हाथ जोड़कर उसने कहा, "महाराज, मैं आपकी सभा मे नहीं आ सका।" आगे कुछ बोलना चाहता था, पर संकोच हो रहा था। विनोबा ने अत्यत स्नेह-भाव से पूछा, "कहाँ रहते हो ?"

"पाँच मील दूरी पर एक गाँव है।"

"क्या करते हो ?"

"काश्तकार हूँ महाराज।"

"तो क्या कुछ गरीब के लिए लाये हो ?"

"जी हाँ, महाराज, मेरे पास कुल सात वीघा जमीन है। दो बीघा देने आया हूँ।"

: २८ :

भूदान-यज्ञ से कोई गरीब नहीं वनेगा

अमेठी सुल्तानपुर जिले की एक रियासत है। इसके राणा रणजय सिंह के पूर्वज एक हजार बरस पहले यहाँ आये थे। ये आमेर (जयपुर) के राजवश के वशज हैं। रियासत मे पहले तीन सौ छब्बीस गाँव थे, जिनमे से छब्बीस गाँवों का राणा ने सार्वजनिक कार्य के लिए ट्रस्ट कर दिया है। अब उनके पास तीन सौ गाँव ही रह गये है। जिले मे कुल

ये ही पूरे स्वामी है । इस जागीर मे कुल पांच हजार बीघा भूमि है, जिसमे करीब दो हजार बीघा बजर है । सारी जागीर मे दस से अधिक मौरूसी काश्तकार नही है । प्राय काश्तकार गैर मौरूसी है, जो तीन साल के पट्टे पर रखे जाते है । जागीर की भूमि के अतिरिक्त एक लाख रुपयो से अधिक के पक्के मकान है । रोहडूवाला मकान इतना बडा है कि उसमे बढिया सस्था चल सकती है । रोहडू की ऊँचाई करीब पाँच हजार फुट है । यह स्थान पाव नदी के किनारे सुरम्य घाटी मे है । सामने ही नही, चारो तरफ हिमालय का मनोरम दृश्य है ।

रोहडू हिमाचल-प्रदेश के महासू जिले की तहसील है । यहाँ तहसीलदार, मैजिस्ट्रेट, थाना, डाकखाना तथा मिडिल स्कूल है। रोहडू ग्राम की आबादी पाँच सौ की है, परन्तु आसपास के ग्रामो की कुल आबादी पचास हजार से अधिक है, जो बीस मील चारो ओर फैले हुए छोटे-छोटे पहाडी ग्रामो मे रहती है ।

महन्त ऊधोदासजी ने आपको अपनी सारी जागीर दे दी है । महन्तजी केवल एकसठ बीघा एक बिस्वा भूमि और एक मकान ही चाहते है । यह भी वे आपके द्वारा ही लेना चाहते है । मैने उन्हे कहा है कि ऐसा होना सभव है ।

विनीत **धर्मदेव शास्त्री**

प्रिय श्री भारतीय जी[१],

अब तो दरिद्रनारायण के लिए सारी ज़मीन मिल गयी। "सर्वस्वं ब्राह्मणस्येयं यत्किञ्च जगतीतले।"

इन जागीरो का ठीक से वितरण हो जायगा तो हिमाचल प्रदेश में ऐसी अनेक अन्य जागीरों का दान मिलने की पूरी आशा है। मैं दान-प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील हूँ।

मैं जब रोहड़ू गया तो महन्त ऊधोदास जी दान-पत्र पर हस्ताक्षर करके ऐसे प्रसन्न हुए, जैसे कन्या को बिदा करके माता-पिता निश्चिन्त हो जाते हैं। कालिदास ने अभिज्ञान-शाकुतल नाटक मे कण्व ऋषि के मुँह से कहलवाया है :

अर्थो हि कन्या परकीय एव,
तामद्य सप्रेष्य परिग्रहीतु।
जातो ममायं विशद. प्रकामं
प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा ।। ४-२२ ।।

महन्त जी की ऐसी ही स्थिति थी। मुझे तो स्पष्ट दीखता है कि पू० विनोवा का कार्य साक्षात् नारायण का कार्य है। यह तो होकर रहेगा।

स्नेहाधीन
धर्मदेव शास्त्री

१– भारतीय = लक्ष्मीनारायण 'भारतीय'

वह अन्धा, अन्धा नहीं था

मुरादाबाद जिले मे चौधरपुर नामक छोटा-सा देहात है। छोटा गाँव हो, बडा गाँव हो, विनोबा हर जगह एक रोज ठहरते है। यहाँ भी एक रोज मुकाम था। तम्बुओ मे डेरा था। रसोई आदि भी साथियो ने ही बनायी थी। हमेशा की तरह शाम को प्रार्थना हुई, प्रवचन हुआ। आसपास के देहातो से भी काफी लोग आ गये थे, पर दान नही के बराबर मिला। बाबा ठीक समय पर सो गये, हम लोग भी १०-१०॥ बजे सो गये।

रात को १२ बजे बैलगाडी मे बैठकर रामचरण नामक एक भाई आये। इनके गाँव से भी कुछ लोग सभा मे आये थे। अपने गॉव लौटकर उन्होने बताया था कि एक फकीर गरीबो के लिए जमीन माँगता घूम रहा है। तो रामचरण जी गाडी मे बैठकर हम लोगो को खोजते-खोजते आये। भाग्य से हमारे यहाँ वही भाई जग रहे थे, जो दान-पत्रो का काम देखते है। रामचरण जी को दोनो आँखो से सूझता नही था। दान-पत्र लिखा कर वे चले गये।

सबेरे रास्ते मे जब बाबा कलेवे के लिए रुके, तो उन्हे बताया गया कि कैसे रात को एक अन्धे ने आकर जमीन दी।

घटना को सुनकर बाबा थोडी देर स्तब्ध रहे। फिर उन्होने कहा "वह अन्धा नही था—स्वयं परमेश्वर हमें आशीर्वाद देने आये थे। उसे अन्धा समझने वाले हम ही अन्धे कहलायेगे।" और उनकी आँखे छलछला आयी।

: ३१ :

पुण्य-कार्य तो मुझे भी करना चाहिए

पीलीभीत जिले मे माधवतांडा एक साधारण देहात है। वहाँ पर जमीन की तो मानो वर्षा ही हुई। एक भाई को खेत पर जरूरी काम से जाना था। वे सभा मे नही आ सकते थे। उन्होने अपने छोटे भाई से कहा कि तुम सभा मे जाना और मेरी तरफ से दस एकड़ का दान-पत्र भर आना। भाई की आज्ञा शिरोधार्य कर वह आया, दान-पत्र भरवाया। फिर कहा,"भाई की तरफ से दान तो मैने दिया,पर मै यूँही लौट जाऊँ, यह अच्छा नही। भाई ने जितनी जमीन दी है, उतनी ही मै भी दूँगा। पुण्य-कार्य तो मुझे भी करना चाहिए।

और उसने दूसरा दान-पत्र अपने नाम से दस एकड़ का भर दिया। करतल-ध्वनि से वातावरण गूंज उठा।

: ३२ :

बूढ़ी माँ का वरदान

विजयपुर नामक देहात की बात है। मंच सुन्दर बनाया गया था। पपीता, आलू, गुड आदि का फलाहार भी हुआ। काफी लोग इकट्ठे थे। लोगो ने बाबा को घेर लिया। रुकना ही पडा बाबा को। थोडे मे उन्होने अपना विचार समझाया और कलेवे के लिए लाये गये पपीते की फाँक लेकर लोगो को देने लगे और जमीन माँगने लगे। बाबा बीच-बीच मे कहते, "अरे चलो रे, यह सारा प्रसाद तुम्हारी राह देख रहा है। प्रसाद लो और गरीब के लिए जमीन दो।" एक बूढी माँ भक्ति-भाव से प्रसाद लेने आयी। बाबा ने पूछा "माता जी, आपके पास कुछ है?" "हाँ, है, छै बीघा।" उसने फिर कहा, "हर कोई प्रसाद लेकर भूदान का पुण्य प्राप्त कर रहा है, मै भी करूँगी। मेरी एक बीघा ज़मीन लिख लीजिये।" उसकी आँखे डबडबा आयी—उसने आदरपूर्वक बाबा के चरणो मे सिर नवाया। बाबा ने शाम की सभा मे इसका जिक्र करते हुए कहा, "मेरे लिए वह हरिदर्शन था। उस बुढिया माता ने तो भगवान् की कृपा समझी कि उसे इस यज्ञ मे हिस्सा लेने का मौका मिला। परन्तु मुझे तो उस दान के रूप मे उस बुढिया माता का आशीर्वाद ही दिखाई दिया।"

: ३३ :

वृद्धा की श्रद्धा

नैनीताल जिले की बात है। कालाडूंगी नामक छोटे देहात मे उस दिन हमारा पडाव था। देहात से आये हुए लोग शाम को अपने-अपने गाॅव लौट गये। ऐसे एक गाँव में एक वृद्धा ने सुना कि बाबा गरीबो के लिए जमीन माँगते है। उसकी कुछ जमीन पहाड़ पर थी, कुछ तराई मे थी। वह चली और ग्यारह बजे पड़ाव पर पहुँची, तो सबको सोया हुआ पाया। सबेरे जागने पर हम लोगों ने बुढिया को दरवाजे पर बैठा पाया। पूछने पर मालूम हुआ कि तराई वाली अपनी ग्यारह नाली जमीन और एक मकान इस यज्ञ मे अर्पण करने की भावना से वह रात से ही प्रतीक्षा करती बैठी है, मानो भगवान् के द्वार पर ही बैठी हो।

प्रात काल की वेला मे, विदाई के समय बूढी माता का वह आशीर्वाद ही तो था इस आन्दोलन को।

: ३४ .

वीर बालक का दान

एक सभा मे विनोवा ने अपील की कि "दरिद्रनारायण के लिए इस यज्ञ मे आहुति अर्पण करनेवाले कोई है ?" चार-पाँच मिनट सभा मे स्तब्धता रही, सब कोई एक-दूसरे

के चेहरे ताक रहे थे। इतने मे १०-१२ साल का एक बालक खडा हुआ। सबकी आँखे उसे कौतूहल से निहारने लगी। अपने आप ही सबके कान यह सुनने के लिए आतुर हो उठे कि वह क्या कहता है। उसने कहा, "मेरे हिस्से मे दस एकड भूमि आती है, मै अपने हिस्से की पूरी जमीन अर्पण करता हूँ।" किन्तु दान की प्रक्रिया पूरी न हो पायी थी। बाबा ने पूछा, "क्या तुम्हारे पिताजी को मजूर है?" उस बालक के पिताजी नही थे। माताजी घर पर थी। सभा के बाद माताजी ने आकर अपने पुत्र के दान की तसदीक कर दी।

३५

गरीब ही गरीब का दुःख जानता है

विन्ध्यप्रदेश की बात है। दो भाइयो के पास तीन एकड ज़मीन थी। बाबा की अपील पर इन्होने भी आध एकड जमीन दान मे दी।

बाबा ने कहा "गरीब गरीब का दु ख जानता है, इसलिए वह सहज और उदारता से त्याग करता है।"

३६

अव्यक्त का प्रभाव

सुरखी की सभा मे ६ मील दूर के गाँव से एक भाई ज़मीन देने आये। वे न बाबा का भाषण सुन पाये थे, न

प्रार्थना में ही शरीक हो पाये थे। खेत में काम करते-करते ही उन्होंने सुना कि सुरखी में कोई बाबा जमीन दान लेने आये हैं। वे वैसे ही काम छोड़कर आये और छै एकड़ में से एक एकड ज़मीन दान देकर चले गये। इतने मे एक दूसरा भाई आया और बाबा के चरणों में तैंतालीस एकड़ का दान देकर चला गया। जिन्होने बाबा का प्रवचन सुना, उनसे इस गाँव मे केवल चार एकड़ जमीन मिली। जिन्होंने बाबा का एक भी शब्द सुना नही, उनसे चौवालीस एकड मिली। इसीलिए विनोबा अक्सर कहते है—"व्यक्त से अव्यक्त का अधिक प्रभाव रहता है।"

: ३७ :

नेहरू चाचा की बरस-गाँठ के निमित्त

डाक से एक दान-पत्र आया। दस वर्ष का एक बालक चौथी कक्षा मे पढता है। भूमिदान की बाते उसने भी सुनी थी। अपने पिताजी से उसने कहा, "हमें भी कुछ देना चाहिए।" पिताजी की भी इच्छा थी। बच्चे ने पडित जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिवस पर इकहत्तर एकड़ का दान-पत्र भेजा, जिसे पडित जी ने डाक से विनोबा जी के पास भेज दिया।

: ३८ :

भगवान् विश्वनाथ का आशीर्वाद

सर्वोदय-सम्मेलन के लिए सेवापुरी पहुँचने के पहले बनारस मे पड़ाव था। अब भूदान-यज्ञ को शुरू हुए एक वर्ष

होने आया था। विनोवा जी की शुरू से कल्पना थी कि एक वर्ष मे एक लाख एकड तक भूमि सग्रह हो सकेगी।

वनारस पहुँचने तक भूदान का आँकडा नव्वे हज़ार के करीव पहुँच गया। इतने में काशी-नरेश का पत्र लेकर एक दूत आ पहुँचा। पत्र में लिखा था

"जिस महान् भावना से प्रेरित होकर आपने यह कठिन व्रत लिया और अपने उद्देश्य की पूर्ति के हेतु समस्त भारतवर्ष की यात्रा गर्मी-सर्दी से तनिक भी विचलित न होते हुए पांव-पयादे कर रहे हं, उसको शब्दों द्वारा व्यक्त करना संभव नहीं। उसके तो आप मूर्तिमान स्वरूप हो गये हं। अत आपके दर्शन से ही लोगो को उसका वास्तविक परिचय मिलेगा। आपके शुभागमन से सभी का हृदय प्रफुल्लित हो रहा है। जन-समुदाय के सुख-सन्तोष के लिए भारतीय परपरा के अनुकूल एक व्यवस्था की झलक लोगो को मिलने लगी है।

"वावा विश्वनाथ के अनुग्रह से आपका यह भगीरथ प्रयत्न सफल हो तथा—

"सर्वेऽपि सुखिन सन्तु, सर्वे सन्तु निरामया·।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद्दुखभाग् भवेत् ॥"

और साथ मे दस हजार एकड का दान-पत्र भी था।

उत्तर मे विनोवा ने लिखा

"प्रेम से अर्पित किया हुआ आपका भूमिदान मिल गया है। उसकी पूर्ति आप करने वाले हैं, यह भी सदेशा हमें मिला है। हम आपसे और एक वात चाहते हं। आपने स्वयं इस यज्ञ में अपना जो हविर्भाग दिया है, वैसा अपने मित्रों से भी दिलायें। इस तरह यह कार्य सहज गति से उत्तरोत्तर वढ़ता रहेगा।

"आपने अपने पत्र में हमारा प्रयत्न सफल होने के लिए वावा विश्वनाथ के अनुग्रह की याचना की है। यह आपकी मेरे लिए वहुत भारी मदद हुई। मेरे इस काम के पीछे उन्हींकी प्रेरणा है और वे ही इस महान् कार्य को सपन्न करने में समर्थ हं। मं हूँ उनकी चरणरज।"

: ३९ :

पूर्णाहुति का पावन दान

एक लाख एकड़ के करीब-करीब अंक पहुँच गया था। फिर भी पूर्णाहुति बाकी थी। इतने मे डाक से एक पत्र मिला, जिसमे साठ एकड़ का दान-पत्र था।

गागोदा से विनोबा के चचेरे भाई ने तथा धूलिया से विनोबा जी के छोटे भाई श्री शिवाजी महाराज ने अपने परिवार की सारी जमीन, करीब साठ एकड का दान-पत्र भेजा था। इस तरह भूदान-यज्ञ के प्रथम वर्ष के एक लाख के मानसिक संकल्प की पूर्ति मे यह अत्यन्त पावन पूर्णाहुति प्राप्त हुई।

: ४० :

वीर नारी

मुख्य मंत्री तथा प्रान्त के अन्य नेताओ द्वारा आग्रह किये जाने पर भी चुनाव मे फिर से खड़े न होने का उन्होने निश्चय कर लिया था। इसी बीच पद-यात्रा मे तार मिला। किसी जरूरी काम के लिए घर बुलाया गया था। आकर देखा कि मित्रों की भीड घर पर लगी हुई है। सब आग्रहपूर्वक कह रहे हैं, 'आपको चुनाव मे खड़ा होना ही पड़ेगा। आप सिर्फ फार्म भर दीजियेगा। बाकी सब हम लोग कर लेगे।'

सबसे क्षमा माँगकर घर मे अपने पिताजी से और सहधर्मिणी से मिलने के लिए वे भीतर गये। कुछ सज्जन फिर भी उनके साथ हो गये। एक मित्र ने दस हजार रुपये का एक चेक भेंट करते हुए कहा : "यदि पैसे की कठिनाई हो

तो यह तुच्छ भेंट स्वीकार की जाय। कही ऐसा न हो कि पैसे की असुविधा के कारण चुनाव मे खडे होने का विचार छोड दिया जा रहा हो। बाकी परिश्रम तो हम सब लोग करेंगे ही।" इतना कहकर वे लोग पिता जी की ओर इस आशा से देखने लगे कि कम-से-कम वे तो उनकी वकालत करेंगे।

चुनाव न लड़ने का अपना निश्चय प्रकट न करते हुए घर वालो की राय जानने की दृष्टि से उन्होने पूछा, "मुन्नी की माँ क्या कहती है? बाबू जी की क्या राय है?" मित्रो की ओर से बाबू जी कुछ वकालत कर ही नही पाये कि इसके पहले पत्नी ने गरज कर कहा, "चुनाव मे अगर खडा ही होना था, तो पहले क्यो नही सोच लिया? क्यो इतनी बडी जिम्मेवारी उठायी? क्या दोनो काम हो सकते हैं? प्रान्त भर की भूदान की जिम्मेवारी क्या कोई मामूली बात है? क्या दरिद्रनारायण के साथ इस तरह विश्वासघात किया जा सकता है? सबसे कह दीजिये कि अब चुनाव मे नही खडे हो सकते। आपको भूदान के सिवा दूसरी बात का विचार भी नही करना है।"

सेवापुरी-सम्मेलन के पहले की यह घटना है। तब तो १९५७ का आह्वान भी नही हो पाया था। भारतीय नारी के इस त्याग और तेज पर किसे गर्व नही होगा?

अपनी वीर सहधर्मिणी के प्रति करणभाई का हृदय कृतज्ञता के भावो से भर आया।

पिता जी ने पुत्र और पुत्रवधू, दोनो को आशीर्वाद दिया।

दिया सो दिया

बाबा की यात्रा पहली बार गया जिले मे हो रही थी। शेरघाटी थाने के एक गाँव में एक वृद्ध किसान बाबा से मिलने आये। वे भूदान के विचार से इतने प्रभावित हुए थे कि अपनी सारी ६० एकड़ अच्छी उपजाऊ जमीन, कुआँ, मकान, फलो से लदे वृक्ष, गाय-बैल आदि पशु-धन सबका सब अर्पण कर दिया। उस दिन से बराबर वे बाबा के साथ यात्रा में ही रहने लगे।

"साथ में कब तक रहना चाहेगे ? घर कब लौटना चाहेगे ?" हम लोगो ने उनसे सहज जानना चाहा। तो उन्होने कहा, "मै कभी भी लौट सकता हूँ, परन्तु मै अब अपनी जमीन पर तो नही लौटूँगा। वह मैने अर्पण कर दी, अत निर्माल्य है। बावा के साथ रहकर उनका काम कर सकता हूँ।"

"जब तक भूमि का वितरण नही होता, आप उसे बाबा की ओर से संभालियेगा। जमीन की ठीक हिफाजत रखियेगा। वितरण होने पर फिर बावा से मिलकर कार्यक्रम ठीक कीजियेगा।" लेकिन वृद्ध किसान उसके लिए तैयार नही हुए। "मैने दे दिया, अब उस वस्तु को नही छू सकता।"

बहुत समझाने पर भी नही माने, आखिर उन्हे उस ज़मीन की जिम्मेवारी से मुक्त करना पड़ा।

: ४२ :

विष्णु-सहस्रनाम

पलामू जिले के कमलेश्वर सहाय सिह (वच्चू वावू) के घर वावा का डेरा था । वच्चू वावू वडे असमजस मे थे कि स्वागत मे वावा के योग्य क्या प्रस्तुत किया जाय । उन्हे कुछ सूझता नही था । उन्होने सुन रखा था कि वावा "विष्णु-सहस्रनाम" सुनने की इच्छा रखते है, दो-चार सौ दाताओ के नाम से उन्हे सतोप नही होता । वच्चू वावू को बात जॅच गयी । उन्होंने प्रयत्न शुरू किया और पहली बार उनक पडाव पर 'विष्णु-सहस्रनाम' का पाठ वावा को सुनाया गया । प्रार्थना-सभा मे एक हजार दाताओ के नाम पढे गये ।

वच्चू बाबू ने भी अपनी जमीन का पष्ठाश प्रदान किया । सपत्तिदान में भी पष्ठाश दिया । और तब से आज तक वरावर भूमिदान के काम मे रमे हुए है । पलामू जिले का भार अब वावा ने उन्ही को सौपा है ।

: ४३ :

संपूर्ण दान

उन दिनो बाबा डाल्टनगंज जिले के नगरउँटारी गाँव मे बीमार थे । वीच में कही रुके बिना डाल्टनगंज जाने की

वात सोची जा रही थी। बच्चू.बाबू ने कहा : "रंका के महाराज आपकी प्रतीक्षा में है। उधर से नही जाइयेगा ?"

बच्चू वाबू का आग्रह देख बाबा रंका गये। महाराज ने स्वरचित सस्कृत-श्लोको से बाबा का स्वागत किया। भूदान की वात चली। वाबा ने पूछा, "कितना दीजियेगा दरिद्र-नारायण के लिए ?" महाराज ने कहा, "अब तक जितने कार्यकर्ता आये, जिसने जितना माँगा, लिया। आप जितना चाहे ले लीजिये।"

"आप के पास कितनी है ?"

महाराज ने सारे कागजात बाबा को भेट कर दिये।

एक लाख एकड परती थी, बारह हजार खुदकाश्त।

वाबा ने कहा, "परती सारी की सारी लिख दीजिये।"

महाराज ने लिख दी।

"खुदकाश्त का पष्ठांश लिख दीजिये।"

महाराज ने यह वात भी मान ली और दो हजार एकड का दान-पत्र लिख दिया।

बाबा ने कहा, "राजा साहब, आपका यह दान सपूर्ण दान है, फिर भी मेरी यह पहली किस्त है। आज तो मै इतना लेकर जा रहा हूँ, लेकिन फिर आऊँगा और तब तक आता रहूँगा, जव तक एक भी भूमिहीन परिवार बचा रहेगा।"

: ४४

हृदय-परिवर्तन और किसे कहते हैं ?

रांची जिले में पालकोट रियासत है । रियासत के राजा लाल साहब ने अपनी जमीन का छठा हिस्सा बाबा को दान मे दे दिया । परन्तु इतने से विनोबा जी का समाधान नही हुआ । "हमारा काम आपको भी करना होगा ।"—उन्होने कहा । राजा साहब ने मान लिया । जिला भूदान-समिति के सयोजक का भार भी सँभाल लिया और आज गाँव-गाँव घूमकर वे दरिद्रनारायण के लिए भूदान माँगने मे जुट गये है ।

हृदय-परिवर्तन के बारे मे अब भी जो शकाशील है, वे सोचें कि हृदय-परिवर्तन और कहते किसे है ।

४५

इसे अपना ही काम समझें

दरभगा के महाराजाधिराज गगा किनारे कुरसैला नामक छोटे-से देहात में आये और एक लाख बीस हजार एकड जमीन का दान बाबा के चरणो मे अर्पण कर दिया । बाबा ने कहा, "आपने दान दिया, यह तो ठीक किया, पर हम चाहते है इस काम को आप अपना ही काम समझें ।"

राजा साहब ने नम्रतापूर्वक कहा, "मुझसे जो बन सकेगा, करने के लिए हाजिर हूँ ।"

: ४६ :

दान की वर्षा

चांडिल मे रामगढ के महाराज ने पहले एक लाख
ड का दान दिया । फिर अपनी यात्रा के दरमियान बाबा
उनके गाँव गये,तो उन्होने अपने सारे परिवार की ओर से
ग-अलग दान-पत्रों द्वारा ढाई लाख एकड़ का और दान दिया।
उन दिनो बाबा रोज श्रमदान करते थे । रानी साहबा
अपने अलकार भी भेट किये । उस दिन वर्षा बहुत जोरों
थी । वैसी वर्षा मे हजारो लोगो के साथ राजा साहब ने
थ मे कुदाली-फावड़ा लेकर घटे भर का श्रमदान भी किया ।

: ४७ :

त्याग की पराकाष्ठा

गया जिले का रेवई गाँव अपने सर्कल का राजा ही
ना जाता है । हजारो की संख्या मे लोग सभा मे हाजिर
। 'जयप्रकाश जिन्दाबाद', 'भूदान-यज्ञ सफल करेंगे', 'सत
नोबा अमर हो' आदि नारो से आसमान गूँज उठा था ।
यप्रकाश जी ने अपना हृदय निकालकर लोगो के सामने
ख दिया और फिर वह सौजन्य की मूर्ति, दान माँगने खडी
। गयी । भूमि की वर्षा होने लगी । लिखने वाले थकने
गे । दशरथ नामक एक वेदार अपने साथ जमीन के
ारे कागजात लेकर आये थे । अपना सब कुछ अर्पण कर

दिया उन्होंने—जमीन, घर-वार, वैल, भैस, सव ! यह दान सुनकर सारी सभा चकित हो गयी। तालियो की गर्जना ने इसका स्वागत किया। जयप्रकाश जी खुद पुलकित हो गये। सारा-का-सारा स्वीकारे या नही ? क्षण-भर सकोच हुआ। परतु वावा के प्रतिनिधि वनकर आये थे। दान स्वीकार करना ही पडा। पर वैल, गाय, भैस, घर आदि को छोडकर केवल जमीन का दान स्वीकार किया।

दशरथ भाई ने यह सारी जमीन अपने पसीने से कमाई थी। एक ही जून और वह भी सत्तू खाकर जमीन जोडी थी।

: ४८

बेटे का पुण्य बेटे के साथ

महाकोशल में सेठ गोविन्ददास जी के नेतृत्व मे एक यात्री-दल ने एक माह मे छै जिलो का दौरा किया। पहले दिन अधिक जमीन नही मिली। वहाँ के प्रमुख कार्यकर्ता नाराज थे कि अन्य सब कामो के साथ यह भूदान की झझट कहाँ से आ गयी। लेकिन यात्रा मे रहते-रहते चार-पाँच दिनो मे ही कार्यकर्ताओ का मानस पूर्णरूपेण बदल गया और बैतूल जिले के एक प्रमुख कार्यकर्ता ने सभा मे स्वय-

स्फूर्ति से घोषणा की कि अब वे भूदान के काम मे जुटेंगे और उस जिले का कोटा छै माह में पूरा कर देंगे। छिंदवाडा जिले में गणेशगज की प्राथमिक शाला के अध्यापक लखनादौन की सभा में उठ खड़े हुए और कहा, "सभा में आने के पूर्व भूदान मे शरीक होने का मेरा बिल्कुल इरादा नही था, लेकिन अब मेरा मन बदल गया है और मैं अपनी सारी ज़मीन, जो छै एकड़ उन्नीस डिसमिल है, भूदान मे देता हूँ। शाला के वेतन से मै अपना काम चला लूँगा।"

होशगाबाद जिले के बरमान गाँव मे सभा समाप्त होने के बाद कुँवरबाई नामक एक बहन ने अपनी कुल दो एकड़ जमीन दान मे दे दी। "अब कैसे गुजर होगी" पूछने पर उसने कहा, "मै दूध-दही बेचकर अपनी जीविका चला लूगी।"

सिवनी मे दाऊ महेन्द्रनाथ सिह से छै सौ एकड़ का छठा हिस्सा यानी एक सौ एकड़ की माँग की गयी थी। उन्होने कहा, "सौ एकड़ मै नही दूँगा।"

"अच्छा तो दो-चार एकड़ कम दीजिये।"

तो उन्होने कहा, "मैंने दो सौ एकड़ देने का तय किया है।"

इसी तरह एक सभा मे एक बालक ने दान दिया, तो पिता जी खड़े हो गये और कहा, "मेरा भी दान लिखिये—बेटे का पुण्य बेटे के साथ, मेरा मेरे साथ!"

शिवि और दधीचि का दान

गया जिले के अलरी थाने मे जेठियन नामक गाँव मे सभा थी। बोलते-बोलते जयप्रकाश जी हृदय की गहराई मे उतर गये थे। बीस दाताओ द्वारा एक सौ पाँच एकड के दान-पत्र भरे गये। जयप्रकाश जी ने पूछा, "क्या भगवान् बुद्ध के इस क्षेत्र में बीस ही दानी है? ऐसा नही हो सकता।" उनकी उस महान्, किंतु नम्र मूर्ति को दान की याचना करते देखकर लोग रोमांचित हो गये। भूदान की वर्षा होने लगी। बाबू शिवधर सिंह खडे हुए। कहा, "साढे छै बीघा।" जयप्रकाश जी ने जाहिर किया, "साढे छै बीघा।" एक कार्यकर्ता ने उनके कान मे धीमे से कहा कि "इनके पास कुल साढे छै बीघा ही जमीन है। सब दे देने पर ये क्या खायेंगे?" जयप्रकाश जी ने जाहिर किया, "इन भाई के पास उपार्जन का दूसरा साधन नही है। इनकी दान-भावना की मै कद्र करता हूँ। फिर भी सिर्फ एक बीघा रखकर साढे पाँच बीघा उन्हे वापिस करता हूँ।" बाबू शिवधर सिंह खडे हुए और हाथ जोड कर बोले, "महाराज, वापस करेंगे तो मै अनशन करूँगा। मेरे शरीर मे ताकत है। कही भी कमाई करके मै पेट भर सकूँगा। आज तक इस धरती से

मैंने सुख प्राप्त किया है। अब मेरे दूसरे गरीब भाइयो को वह सुख मिलने दीजिये।"

जयप्रकाश जी गद्‌गद हो गये। सभा भी मुग्ध हुई। जयप्रकाश जी ने उनसे कहा, "मैं आपके सामने नतमस्तक हूँ। आप शिवि, दधीचि, हरिश्चन्द्र और कर्ण के वशज है। शरीर का अश काट देनेवाले, हड्डियाँ निकाल कर देनेवाले दानवीरों के वशज है आप। उनका खून आपकी नस-नस मे रम रहा है, इसका मुझे ध्यान नही था। दाता की जैसी इच्छा हो, मै दान स्वीकार करता हूँ।"

. ५० .

संपूर्ण त्याग

गया जिले के वजीरगंज मे पडाव था। जयप्रकाश जी ने कहा, "भारत की मानवता का साक्षात्कार हो रहा है। आध्यात्मिक शक्ति का आविष्कार अपनी आँखो के सामने सिद्ध होता हुआ हम देख रहे है। भाषण के वाद वे खड़े रहे, तो दान-गंगा का प्रवाह वहने लगा। शुरू मे कार्यकर्ताओं ने अव तक के प्राप्त दान-पत्र अर्पण किये। वाद मे भागवत पाडे खडे हुए और उन्होने तीन वीघा भूदान जाहिर किया। दूसरे एक सज्जन ने तुरन्त उठ कर कहा, "१९३० से पांडे जी

५३

स्वामित्व का विसर्जन

श्री नारायण देसाई अपनी पचमहाल जिले की यात्रा का वर्णन लिखते हैं :

रमणिया गाँव में श्री देसाई नामक एक सज्जन रहते हैं, सात्विक और सेवा-भावी। जब हम उनके यहाँ पहुँचे तो उन्होंने प्रेमपूर्वक हमारा स्वागत किया। उनकी भू-दान सम्बन्धी कुछ नयी शंकाएँ भी थी, जो हमने दूर की। उन्होने अपनी अट्ठाईस एकड जमीन मे से आठ एकड पहले ही भूदान मे दे दी थी। साठ एकड की एक जागीर भी उनकी थी। उस पर से भी स्वामित्व छोड देने का उनसे आग्रह किया गया। वे हिसाब-बही में से एक-एक खातेदार (रैयत) का नाम और विवरण सुनाने लगे।

मैंने पूछा, "फलाँ भाई की स्थिति कैसी है ?" "गरीब है।" "फिर आपको उसकी जमीन पर का हक छोड देना चाहिए।" इसपर उन्होने कोई बहस नही की, दान-पत्र पर उस रैयत की जमीन का सर्वे नम्बर लिख दिया। फिर दूसरे भाई का नाम पढा गया। पूछा, "इसकी स्थिति कैसी है ?" "वह मध्यम स्थिति का है।" "क्या उसकी भी जमीन छोडना आप पसन्द करेंगे ?" श्री देसाई कहने लगे, "जो जाने वाला है, उसे सम्मान से अर्पण करने मे ही हमारी शोभा है।

उसकी भी जमीन लिख लीजिये।" इस तरह अलग-अलग खातेदारों की मिलकर कुल साढ़े उन्तीस एकड़ जमीन पर का अपना स्वामित्व उस दिन उन्होंने छोड़ दिया। उनकी ज़मीन का यह करीब आधा हिस्सा था। उनके बरामदे मे बैठे हुए हिन्दोलिया वासी भील हमारी बाते बहुत ध्यान से सुन रहे थे। जैसे-जैसे श्री देसाई एक-एक की जमीन पर का स्वामित्व छोडते थे, वैसे-वैसे वे लोग अधिकाधिक प्रभावित होते जाते थे।

: ५४ .

नारी-चेतना का दृश्य

वडौदा जिले मे श्री हरिवल्लभ परीख भूदान-यात्रा कर रहे थे। रंगपुर से २५ मील दूर, धारोली गाँव मे सभा थी। दान-प्राप्ति के कार्यक्रम के वाद वहाँ के जमीदार श्री भीखूभाई शाह की पत्नी की वहन ने अपने सव गहने उतार कर दे दिये। उस वहन से उन्होंने पूछा, "अव फिर से तो नही वनवाओगी ?" उसने जवाव दिया, "न वनवाने के संकल्प के साथ ही यह विपत्ति रूप सम्पत्ति आप के हवाले कर रही हूँ। आज हम स्त्रियो की आँखें खुल गयी है।"

: ५५

छोटों का दिल बड़ा होता है

एक दिन सवेरे राधनपुर मे रविशकर महाराज दातून करने बैठे थे। इतने में जेकडा गाँव के हीरजी भगत उनके पास आकर खडे हो गये। महाराज ने पूछा, "कैसे आना हुआ ?"

"कुछ नही, यो ही पाँव छूने आया था।"

थोडे समय बाद भी भगत को वही खडा देखकर महाराज ने पूछा, "क्या काम था ?"

"मुझे कुछ जमीन दान करनी है।"

"तुम्हारे पास कितनी जमीन है ? कितनी दान करना चाहते हो ?"

"बारह बीघा

पर क्या आप मेरे

राह देख रहे है।

महाराज के

कुम्हार पर बहुत बो

के लिए नही गये।

कुछ ही हे

उस समय भी हीर

"महाराज, मैंने वह जमीन एक हरिजन को दे दी। उस खेत मे वाजरे की इतनी अच्छी फसल हुई है कि उसे देखकर मै वहुत खुश हूँ।" महाराज ने स्मित मुद्रा में इस भूदान और वितरण पर अपनी सम्मति प्रकट की। जाते-जाते उत्साह से हीरजी भाई कहने लगे, "आपको तो मैंने चार बीघा का वचन दिया था। किन्तु इतनी थोड़ी जमीन में उस गरीब का कैसे चलता, अतः मैंने उसे छै बीघा जमीन दे दी थी।"

विनोबा जी इसीलिए तो कहते है कि "छोटों का दिल बड़ा होता है।"

: ५६ :

भगवान् तो बैठे हैं न !

मढी-आश्रम की छात्राएँ श्री गोमती वहन तथा जुगतराम भाई के साथ भूदान-यात्रा के सिलसिले मे खोजपारडी गयी थी। वहने घर-घर जाकर भूदान का सदेश सुनाती थी। एक सज्जन ने अपनी छै एकड ज़मीन भूदान मे अर्पण की। गाँव के दूसरे लोग आश्चर्यचकित हो गये। जुगतराम भाई ने पूछा, "भाई, तुम्हारे पास कितनी ज़मीन है?" कालिदास भाई ने कहा, "छै एकड़। तीन-चार दिन पहले ही हम सव भाइयो का वँटवारा हो गया और मेरे हिस्से मे छै एकड़

जमीन आती है । आज मै अपनी सारी जमीन अर्पण करना चाहता हूँ ।"

पहले लगा कि अकेले ही होगे, इसीसे हिम्मत की । पर बाद में मालूम हुआ कि परिवार मे पत्नी है और चार लडके है । "अब तुम्हारा गुजर कैसे होगा ?" पूछा, तो उसने कहा, "मेहनत-मजदूरी करूँगा । भगवान् तो बैठा है न !" उसके चेहरे पर समाधान तथा प्रसन्नता के भाव स्पष्ट दिखाई दे रहे थे । दान ग्रहण करनेवाले भी गद्‌गद हो गये ।

५७

गोवा की आहुति

गोवा के सावई गाँव मे श्री म० ल० रानडे नाम के नवयुवक प्रायमरी शाला के शिक्षक है। खादीधारी है । गाधी-विचारो पर निष्ठा है । शुरू से ही भूदान-यज्ञ की ओर आकर्षित हुए है । उनका एक पत्र आया था । पत्र स्वय आहुति का महत्त्व बताता है ।

" पत्र के साथ मनीआर्डर से ५७ रु० ८ आ० भेज रहा हूँ । कुछ रोज पहले आपके द्वारा भेजी गयी 'आन्दोलन' और 'भूमिका' नामक पुस्तको के दाम मे आठ आने जा रहे है, आपने ये किताबे बुकपोस्ट द्वारा भेजी थी । किताबो की कीमत के चार आने पोस्ट के जरिये भेजने को

कहा था । लेकिन गोवा के डाक-टिकट भारत में चलते नही, इसलिए मैंने वह भेजा नहीं । आपको इसकी सूचना देना जरूरी था । लेकिन आजकल-आजकल करने में काफी देर हो गयी, इस विलम्ब के लिए दंड-स्वरूप चार आने ज्यादह भेजे हैं । कृपया स्वीकार करे । ५७ रु० पूज्य विनोबा जी के भूदान-आन्दोलन के लिए है । मैं एक गरीब स्कूल-मास्टर हूँ । मेरे पास दान-यज्ञ मे दने के लिए जमीन नहीं है । जो कुछ थोडी-सी तनख्वाह पाता हूँ, उसमे से पाई-पाई करके बचाई हुई यह पूँजी है । यह सुदामा के तंदुल स्वीकार करने के लिए प्रार्थना है ।"

: ५८ :

मुझे नाम की इच्छा नहीं थी

हमारी बहन सत्यबाला जी भू-दान-यात्रा करती हुई गाबड़ ग्राम पहुँची । गाबड़ ग्राम अधिकतर महाजनों की वस्ती का गाँव है । सभा में जमीदार और किसान भाइयों की अच्छी सख्या थी । सत्यबाला बहन ने भू-दान की बात समझाते हुए कहा, "प्रतिष्ठा और नाम के लिए जो दान किया जाता है, वह सात्विक नही होता, देनेवाले में अहकार और लेनेवाले मे दीनता न आये, वही दान उत्तम है ।"

सभा समाप्त हुई । कोई दाता आगे न बढे । आज नही

जमीन आती है। आज मै अपनी सारी ज़मीन अर्पण करना चाहता हूँ।"

पहले लगा कि अकेले ही होगे, इसीसे हिम्मत की। पर बाद मे मालूम हुआ कि परिवार मे पत्नी है और चार लडके है। "अब तुम्हारा गुजर कैसे होगा?" पूछा, तो उसने कहा, "मेहनत-मज़दूरी करूँगा। भगवान् तो बैठा है न!" उसके चेहरे पर समाधान तथा प्रसन्नता के भाव स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। दान ग्रहण करनेवाले भी गद्‌गद हो गये।

५७

गोवा की आहुति

गोवा के सावई गाँव मे श्री म० ल० रानडे नाम के नवयुवक प्रायमरी शाला के शिक्षक है। खादीधारी है। गाधी-विचारो पर निष्ठा है। शुरू से ही भूदान-यज्ञ की ओर आकर्षित हुए है। उनका एक पत्र आया था। पत्र स्वय आहुति का महत्त्व बताता है।

" पत्र के साथ मनीआर्डर से ५७ रु० ८ आ० भेज रहा हूँ। कुछ रोज पहले आपके द्वारा भेजी गयी 'आन्दोलन' और 'भूमिका' नामक पुस्तको के दाम मे आठ आने जा रहे है, आपने ये किताबे बुकपोस्ट द्वारा भेजी थी। किताबो की कीमत के चार आने पोस्ट के जरिये भेजने को

कहा था। लेकिन गोवा के डाक-टिकट भारत मे चलते नही, इसलिए मैने वह भेजा नही। आपको इसकी सूचना देना जरूरी था। लेकिन आजकल-आजकल करने मे काफी देर हो गयी, इस विलम्ब के लिए दड-स्वरूप चार आने ज्यादह भेजे है। कृपया स्वीकार करे। ५७ रु० पूज्य विनोबा जी के भूदान-आन्दोलन के लिए है। मै एक गरीब स्कूल-मास्टर हूँ। मेरे पास दान-यज्ञ में दने के लिए जमीन नही है। जो कुछ थोड़ी-सी तनख्वाह पाता हूँ, उसमे से पाई-पाई करके बचाई हुई यह पूँजी है। यह सुदामा के तदुल स्वीकार करने के लिए प्रार्थना है।"

: ५८ :

मुझे नाम की इच्छा नहीं थी

हमारी बहन सत्यबाला जी भू-दान-यात्रा करती हुई गावड ग्राम पहुँची। गावड ग्राम अधिकतर महाजनों की बस्ती का गॉव है। सभा मे जमीदार और किसान भाइयों की अच्छी सख्या थी। सत्यबाला बहन ने भू-दान की बात समझाते हुए कहा, "प्रतिष्ठा और नाम के लिए जो दान किया जाता है, वह सात्विक नही होता, देनेवाले मे अहकार और लेनेवाले मे दीनता न आये, वही दान उत्तम है।"

सभा समाप्त हुई। कोई दाता आगे न बढे।

जमीन दान मे दी। गाँव वालो ने भी दी। चार घटे के भीतर २१५ एकड जमीन का दान लेकर मै उस गाँव से लौटी।"

६०

विचार समझाना हमारा धर्म है

गया जिले की बात है। दिन भर मे दो-तीन गाँव हो आये थे, रात बिलौटी नामक गॉव में पडाव डालना था। पिता जी और माता जी तथा साथ के कार्यकर्तागण पैदल निकले, हम पाँच भाई-बहन और श्री दिवाकर जी मोटर से जा रहे थे। रात का समय था, रास्ता ठीक से पूछ लिया था, फिर भी भटक गये।

पहाडी इलाका था, रास्ता खोजते-खोजते हम नदी के पास पहुँच गये—आसपास देखने पर एक छोटी-सी रोशनी दिखाई पडी। दिवाकर भाई और ड्राइवर साहब वहाँ गये। वहाँ एक छोटीसी झोपडी थी। एक नौजवान भाई से पूछा, तो उन्होने झट से कह दिया कि "भाई, रास्ता-वास्ता दिखाने के लिए मुझे अभी फुरसत नही है।" अदर वृद्ध पिता जी बैठे थे। आवाज़ सुनकर बाहर आये। जब उन्होने सुना कि रास्ता भटक गये है, साथ मे छोटे बच्चे भी है, तो बूढे बाबा ने तुरत कहा, "चलो-चलो, मै रास्ता दिखाता हूँ।

बच्चे तो भगवान् है।" और वे दौड़े दौडे मोटर के पास आये। साथ मे ४–५ गन्ने भी लेते आये थे। बच्चों के प्रति कितना स्नेह! उन्होने हमे ठीक से अपने मुकाम पर पहुँचा दिया।

हमने माँ से और पिता जी से उन्हे मिलाया। पिता जी ने अपने पास बिठाते हुए उनसे पूछा कि किस बस्ती मे रहते है, क्या करते है, और धन्यवाद दिया कि बच्चो को पहुँचा दिया।

बूढे ने सरलता से कहा, "उसमे क्या हुआ, ये लोग रास्ता भूल गये थे, मैंने पहुँचा दिया।" फिर पिता जी ने पूछा, "पता है ये लोग क्यो घूमते है ?" हाथ जोड़कर कहने लगे, "हम क्या जाने ?" फिर उन्हे पिता जी ने बाबा का सदेश सुनाया। लोग कहने लगे कि उनके पास नही के बराबर जमीन है। आप क्यो अपना समय बेकार बर्बाद करते है ? पिताजी ने कहा, "उन्होने इतना कष्ट किया। हमारे विचार उन्हे मालूम होने चाहिए। वे हमारे कार्यकर्ता बन गये है।"

सारी बात सुन कर उस बूढे बाबा ने हाथ जोड़कर कहा, "दस कट्ठा मेरे पास है। एक धुर लिख लीजिये। जमीन भी नदी किनारे की है। भारी समझी जाती है।"

हम लोगो का हृदय यह त्याग देख कर भर आया।

हमे पहुँचाने आये और यह भेट भी चढा कर जा रहे है। जमीन कितनी दी, इसका महत्त्व नही, भावना का महत्त्व है। विनोवा के शब्द याद आये—"भगवान् की लीला अपार है। उसने छोटे का दिल वडा वनाया है।"

· ६१

मरने से नहीं डरता

गया जिले की बात है। हम लोग वाराचेट्टी थाने मे सपरिवार यात्रा कर रहे थे। पडाव लहथुआ मे था। नारायण जी नामक एक कार्यकर्ता को गया से भेजा था। नारायण जी लहथुआ के लिए गया से रवाना हुए। उनके साथ भू-दान-साहित्य, डाक और जरूरी सामान था। मोटर से उतरकर लहथुआ गाँव पहुँचना था। करीव दो मील का रास्ता पैदल तय करना था। रास्ता जगल से होकर था। रात के करीव आठ बजे का समय था। थोडी दूर जाने पर दो आदमियो ने उनका पीछा किया और मुक्को से उन्हे मार गिराया। गरदन के दोनो बाजू लाठी रखकर दबाने को तत्पर ही थे कि इतने मे एक तीसरा आदमी झाडियो मे से बाहर निकला। उसको कुछ पूछ-ताछ करने की प्रेरणा परमेश्वर ने दी। नारायण जी ने कहा, "मै विनोबा जी का कार्यकर्ता हूँ। उनके मत्री के पास डाक और साहित्य लेकर जा रहा हूँ।

मृत्यु से मै घबराता नही। आप मेरी जान लेना चाहते है, तो ले सकते है। पर इससे गरीबों का और आपका ही नुकसान होगा।" वाल्मीकि की कथा नारायण भाई ने उन्हे सुनायी। और आश्चर्य क्या कि वह वहाँ चरितार्थ भी हो गयी। उन लोगो ने आगे से ऐसा निकृष्ट कार्य न करने का सकल्प किया और नारायणजी को लहथुआ के नजदीक तक पहुँचाकर तथा क्षमा माँगकर लौट गये।

६२ :

घर भूदान में

छोटे-छोटे दानो के समाचार अक्सर आते है। परिमाण मे ये दान छोटे अवश्य होते है, पर परिणाम मे महान् होते है, सुदामा के तंदुल और शबरी के बेर की तरह।

गया जिले के घोषी थाने मे गरीवो मे दान देने के लिए होड-सी लग गयी थी। छोटे-छोटे किसान जी खोलकर दान करते थे। पुराने जन-सेवक श्री रामभजन दत्त एक रोज पैदल-यात्रा से लौट रहे थे। घोषी थाने के सुकियामा ग्राम का एक गरीव माली दौड़कर उनके पास आया और बड़ी आरजू से कहने लगा, "जमीनवाले जमीन दे रहे है। मेरे पास तो सिवा घर के और कुछ नही है। मै उसीको

भू-दान मे देना चाहता हूँ। कृपा कर इसे स्वीकार कर लीजिये।"

: ६३ :

पति से पत्नी ने अधिक दिया

बहनो ने भी भू-दान मे काफी हिस्सा लिया है। मकियाहूँ गाँव मे विनोबा के पहुँचने पर एक मुसलमान भाई ने ११ एकड जमीन का दान-पत्र अर्पण किया और कहा, "मेरी पत्नी बीमार है, आप वहाँ आयेगे ?" उस बहन के बदले उसकी छोटी-सी लडकी ने आकर ११॥ एकड जमीन का दान दिया। विनोबा तो घर के दरवाजे में ही खडे थे। उनको मालूम हुआ कि वह बहन सख्त बीमार है। इसलिए वे स्वय ऊपर जाकर उससे मिल आये। विनोबा ने उस भाई से कहा—"तुम्हारी अपेक्षा तुम्हारी पत्नी ने अधिक जमीन दी। यह ठीक ही हुआ।"

६४

इक्यावनवाँ हिस्सा

८० वर्ष का एक बूढा लकड़ी के सहारे चलकर बाबा राघवदासजी के पास पहुँचा। बोला, "भूमिवाला बाबा कहाँ है ?"

"क्यों ? पास के गाँव मे ही उनका पड़ाव है ।"

"मुझे उनका दर्शन करने चलना है ।"

"जरूर करना, जमीन-वमीन कुछ दोगे ?"

"मेरा तो क्या वूता है, पर अपनी शक्ति और बाबाजी की इच्छा के अनुसार कुछ तो दूंगा ही ।"

विनोवा ने इनके साथ हिसाब किया ।

"आपके पास कितनी जमीन है ?"

"दो एकड़ ।"

"घर में खानेवाले कितने है ?"

"छोटे-मोटे सव मिलाकर कोई पचास होगे ।"

लोगों के मन में प्रश्न उठा कि इसके पास से भला क्या लेना है । इसको तो उल्टे देना ही चाहिए । विनोवा जमीन का वितरण शुरू करेगे, तव जरूर ऐसे लोगो को जमीन देंगे ।

पर अभी तो वे गरीवो की सेना खड़ी कर रहे है । उसम गरीव सैनिक को भरती न करें ?

वे वोले, "आपकी जमीन का इक्यावनवाँ हिस्सा मै लूंगा ।"

: ६५ :

बेटी को खाली हाथ लौटाओगे?

सियाडीह गाँव के नजदीक ही एक छोटा-सा देहात था। साथियों ने कहा कि "बहन, इस गाँव मे ठहरने से कुछ फायदा नही, कुछ खास मिलेगा नही।" मैंने कहा, "विचार समझाना हमारा धर्म है।" थोडी ही देर मे लोग जमा हो गये। थोडे मे उन्हे अपना विचार समझाया। एक भाई ने अपना सातवाँ हिस्सा दान किया। सामने बैठे एक भाई से मैंने पूछा, "कहिये, आपकी ओर से कितनी लिखूँ?" कहने लगे, "एक बीघा लिख लो।" मैंने सहज पूछा, "आपकी कुल जमीन है कितनी?" "२४ बीघा।" मैंने कहा, "केवल १ बीघा बहुत कम है।" "अच्छा १।। लिख लीजिये।" मैंने कहा, "विनोबाजी का आदेश है, छठा हिस्सा लेना चाहिए।" बोले, "नही, मेरे लिए इतनी बहुत ज्यादह हो गयी, अब मैं एक धुर भी नही दे सकता।" मैंने कहा, "बाबाजी, आपकी बेटी बनकर आयी हूँ। क्या बेटी को खाली हाथ बिदा करेंगे?" "अच्छा, लिख लो ४ बीघा।" मैंने मन ही मन प्रणाम किया और बाबा का वाक्य याद आया—"श्रद्धा से माँगने जाओगे, तो जरूर मिलेगा।"

बाद मे सभी को आश्चर्य हुआ कि उन भाई ने छठा

हिस्सा कैसे दे दिया, क्योंकि अपने इलाके में कंजूसी के लिए वे प्रसिद्ध थे !

: ६६ :

मैं इस गाँव में नहीं रहूँगा

गुरुवा थाने का आखिरी पड़ाव था । सबने अपना-अपना हिस्सा दिया । प्रजा-समाजवादी कार्यकर्ता श्री अम्बिका बाबू के पिताजी ने देने से इनकार कर दिया । पिताजी ने बहुत समझाया । अंत में सभा के बाद आगामी योजना बनी । अम्बिका बाबू ने कहा, "अब मै इस गाँव में नही रहूँगा । मेरे पिताजी ने अपना हिस्सा नही दिया है, इसलिए मैं और मेरा बच्चा, हम सब आपके साथ चलते है ।" अम्बिका बाबू के भाई वहाँ बैठे यह सब सुन रहे थे । उठकर उन्होंने कहा कि "नही, ऐसा नही होगा । हम भी छठा हिस्सा देंगे ।"

: ६७ :

मैं सोच-समझकर दे रहा हूँ

गया जिले के मखदुमपुर थाने की बात है । मखदुमपुर से दो मील दूरी पर एक सभा हो रही थी । सभा के बाद भू-दान की घोषणा शुरू हुई । रामकृष्ण नामक एक किसान

ने कहा, "मेरी सारी जमीन लिख लीजिये ।"

"कितनी है आपकी जमीन ?"

"तीन एकड ।"

"फिर आप क्या करेंगे ?"

"मजदूरी ।"

"घर मे कौन-कौन है ?"

"पत्नी और बच्चा ।"

"आप आध एकड दीजिये और ढाई एकड अपने लिए रख लीजिये ।"

"जी नही, मै तो अच्छी तरह मजदूरी कर सकता हूँ । मैने तय किया है, मै सोच-समझकर सारी जमीन दे रहा हूँ ।"

बहुत समझाने पर भी वह नही माना । लोगो ने कहा, "ये तीन भाई है। छह बरस से कोर्ट मे झगडा चल रहा था । अभी फैसला हुआ है । इसकी जमीन के दस हजार रुपये लग चुके है ।" जब बार-बार समझाने पर भी नही माना, तो बापूजी और विनोबाजी की जयजयकार के बीच वह दान स्वीकार कर लिया गया ।

६८ :

सद्भावना का साक्षात्कार

हमारी यात्रा बाराचेट्टी थाने मे हो रही थी । पडोस में ही फतहपुर थाने की सीमा थी । चार मील पर छपरा

। एक बड़े भूमिवान बबन बाबू की खुदकाश्त खेती
बबन बाबू अक्सर इधर रहते नही है, पर आज खबर
कि आये हुए है। उदार है। पहिले एक हजार एकड़
के है, पर और भी दे सकते है। देने की गुजाइश है।
जाना था सीधे सात मील। अगर बबन बाबू से मिल-
जाते है, तो छह मील का और चक्कर पड़ता है।
ला बीमार हो गयी थी। आनन्द बीमार था। वाहन
ा कोई प्रबध नही हो सकता था। सबने सोचा कि
दरिद्रनारायण की झोली लेकर निकले है, बबन बाबू से
मिलकर ही जाना चाहिए। बच्चो का भी उत्साह देखा
तो सबने "रमारमण गोविन्द हरे" का स्मरण करके
फतहपुर की दिशा मे कूच कर दिया।

हमारे साथियों ने कुछ ही समय पहले जाकर हमारी खबर उनके पास पहुँचा दी थी। बबन बाबू ने बहुत प्रेम-पूर्वक स्वागत किया, फिर उन्होने बातचीत शुरू की—

"मै आज आप लोगो से बहुत नाराज हूँ।"

"ऐसा कोई अपराध तो हमसे हुआ स्मरण नही आ रहा है।"

"बीमार बच्चो को लेकर यहाँ तक आने का कष्ट आ' क्यों किया ? मुझे बुला लेते। सिर्फ सदेशा देते, तो मै : स्थित हो जाता।"

"बहुत-बहुत क्षमा माँगते है आपसे" कहकर हम लोगो ने मन-ही-मन उनकी सद्भावना की सराहना की।

स्नान-भोजन आदि के बिना वहाँ से निकलना सभव नही दिखाई दिया। भोजन की तैयारी हुई। अब बैठना होगा भोजन को। अनुकूल समय देख कर भाऊ[1] ने दक्षिणा की बात छेडी।

"आपने तो पहले ही एक हजार एकड भूमि दी है। इसके लिए हम आपके बहुत आभारी है। फिर भी हमारी माँग तो रहेगी ही। आपकी भूमि का हम लोगो को कोई अन्दाज नही है। परन्तु कुछ मित्रो ने बताया कि अभी और थोडी गुजाइश है, आपके पास देने की। अब आप ही सोचिये। भूमि की समस्या बिना षष्ठाश के हल नही होगी। बडे भूमिवानो को तो अधिक-से-अधिक देना होगा। तो हम चाहते है कि फिलहाल आप षष्ठाश पूरा कर दे। फिर अधिक आप जितना भी चाहे। इससे अन्य भूमिवानो से माँगने मे भी बडी सहायता होगी।"

बबन बाबू ने अपना हिसाब देखा। कागजात पूरे पास थे नही, फिर भी उन्होने बताया कि मै अन्दाज से उतना अक लिख देता हूँ कि षष्ठाश से कम न हो। उन्होने पाँच सौ एकड का नया दान-पत्र भर दिया। कुल पद्रह सौ एकड हुई। वे कितने एकड का दान-पत्र भरते है, इसीकी ओर सब

[1] लेखिका के पिता श्री दामोदरदास मूंदडा।

टकटकी लगाये बैठे थे। माला और भारती का बुखार तो न जाने कब का हवा हो चुका था। बबन बाबू ने आनन्द के हाथ से दान-पत्र लिखाया। उनके साथ सबको बड़ी आत्मीयता का अनुभव हुआ। बच्चों के लिए सवारियो का भी प्रबन्ध उन्होने करा दिया।

चलते समय भाऊ ने एक और मॉग की, "षष्ठांश आपने दिया, यह तो बहुत अच्छा हुआ। परन्तु विनोबाजी का समाधान इतने से नही होता। आप अपने बडे भूमिवान मित्रो से भी भूमि दिलवाइयेगा। आप लोग ही तो विनोबा का काम करनेवाले है।"

कुछ सोचकर बबन बाबू ने कहा, "अभी फरवरी है आप अप्रैल, मई मे अपने कार्यकर्ता को भेजिये। मै इध आसपास के पचीस-तीस गॉवो मे, जहाँ मेरा सबंध है, भूद का काम करने को तैयार हूँ। प्राय. सभी देगे।"

उस दिन के सत्सग को याद करते है, तो आज भी सब गद्गद हुए बिना नही रहते।

: ६६ :

अपूर्व प्रसंग

यो तो चांडिल-सम्मेलन के पहिले से ही जयप्रका अपनी पूरी शक्ति से भूदान-यज्ञ मे कूद पडे थे, परन्तु मथन चलता ही था।

अपने अनुभव से उन्होने देखा कि बिना जीवन-समर्पण किये भूदान-यज्ञ का यह देवता प्रसन्न होनेवाला नही है। बोधगया-सम्मेलन मे उन्होने अपने जीवन-दान की घोषणा कर दी तथा सबका आवाहन भी किया।

दूसरे रोज प्रात प्रार्थना के बाद तुरन्त ही जयप्रकाशजी के हाथ मे जीवन-दान का एक समर्पण-पत्र पहुँचा।

"श्री० ज० प्र०,

आपके आवाहन पर भूदान-मूलक ग्रामोद्योगप्रधान अहिसक क्रान्ति के लिए मेरा जीवन-समर्पण।

२०-४-'५४ विनोबा के प्रणाम"

पत्र के मजमून ने धीर-गभीर जयप्रकाशजी को हिला दिया। उनका विनम्र व्यक्तित्व इस गुरुतर भार को सहन करने मे सकुचाने लगा। जैसे-जैसे उनका सकोच बढने लगा, हिमालय की ऊँचाई की तरह समर्पण का गौरव बढने लगा। और दो घटे की अवधि मे पाँच सौ से अधिक कार्यकर्ताओ ने, जिनमे सर्व-सेवा-सघ के अध्यक्ष तथा सम्मेलन की अध्यक्षा से लेकर छोटे-से-छोटे कार्यकर्ता भी शरीक है, अपना जीवन अर्पण कर दिया।

मानव-इतिहास मे यह प्रसग अपूर्व ही समझा जायगा।

प्रेम का आक्रमण

उस दिन एक सज्जन गया-जिला-भूदान-समिति के दफ्तर मे आकर दो सौ एकड़ का दान-पत्र लिखा गये और इतनी नम्रता के साथ और भक्तिभाव से कि जैसे विशेष कुछ किया ही न हो। उन्हे विनोबाजी का पूरा साहित्य सौंपा गया। वह भी वे उत्साहपूर्वक ले गये।

अब तक गया शहर के काम मे श्री डा० केशवप्रसाद सिंह विशेष उत्साह से योग देते थे, लेकिन उन्होने गया से हमेशा के लिए पटना जाकर रहना तय किया। तब गया शहर की जिम्मेदारी किसे सौंपी जाय ? श्री भूप वावू का नाम सुझाया गया। वे भाऊ को लेकर भूप बाबू से मिलने उनके घर गये। भूप बाबू को देखते ही भाऊ ने कहा, "आपने ही तो उस रोज कार्यालय मे जाकर दो सौ एकड़ का दान लिखाया था ?"

भूप बाबू चुप रहे। उन्हे बड़ा सकोच हो रहा था। "अब आपको विनोबा का कार्यकर्ता भी बनना होगा।" और तब से भूप बाबू भूदान मे अधिकाधिक दिलचस्पी लेने लगे।

इस बीच विनोबाजी की गया जिले की दूसरी यात्रा तय हुई। मित्रों ने स्वागताध्यक्ष का बोझ भूप बाबू पर

ही डाला । एक ओर भूप बाबू को उत्साह था कि विनोबा-जी की सेवा का मौका मिला, दूसरी ओर उनकी चिन्ता बढ रही थी कि विनोबा को भेंट देने योग्य पत्रम् पुष्पम् क्या जुटाया जाय ? लोगो से दान माँगने मे उन्हे सकोच होने लगा । बडे-बडे जमीदारो से मिलने जाना था । रात भर भूप बाबू का भक्त-हृदय कुछ बेचैन रहा। प्रात काल से वे उत्साहपूर्वक दान माँगने में जुट गये । उनकी वाणी मे किसी विशेष सकल्प का बल प्रकट होने लगा । विनोबाजी का स्वागत करने के लिए वे मच पर खडे हुए और उन्होने अपना हृदय विनोबाजी की सेवा मे खोलकर रख दिया—

"विनोबाजी, मै अपनी सारी जमीन, करीब तीन हजार बीघा, आपकी सेवा मे अर्पण करता हूँ ।"

"करीब" इसलिए कहा कि कागजात तैयार नही हो पाये थे । हिसाब तैयार हुआ तो जमीन का अक दुगुना निकला ।

गर्मी के दिन थे। एक दिन भूप बाबू ने भाऊ को बहुत चिंतित देखा ।

"आपके मन पर किस बात का बोझ है ?" भूप बाबू ने पूछा । "दफ्तर के लिए ठीक मकान नही मिल रहा है । काम बढता जा रहा है । दो-दो जगह दफ्तर है—डाक बॅगले में भी और स्टेशन-धर्मशाला मे भी । लोगो को आने-जाने में भी काफी दिक्कत होती है ।"

"अभी आज ही दफ्तर अपने घर ले चलिये। वहाँ हम लोग भी कुछ अधिक समय दे सकेंगे। आश्रम का वातावरण रहेगा। बच्चो को भी सस्कार मिलेगे।" भूप बाबू को असुविधा न हो, इस खयाल से स्थान-परिवर्तन नही किया गया।

परंतु बोधगया-सम्मेलन के बाद प्रांतीय भूदान का कार्यालय तो गया आना तय रहा ही—सर्व-सेवा-सघ का कार्यालय भी गया रखना तय हुआ।

इस बार भूप बाबू नही माने। उनकी ओर से मानो प्रेम का आक्रमण ही हुआ। सर्व-सेवा-सघ का कार्यालय अपने निवास मे रखने के लिए उन्होने श्री वल्लभस्वामी को राजी कर लिया। स्वामी ने भी भक्त-हृदय का आतिथ्य स्वीकारना ही उचित समझा।

आज भूप बाबू का निवास भूदान-कार्य का एक महत्त्वपूर्ण अखिल भारतीय केन्द्र बन गया है।

: ७१ .

दो के बदले पचास एकड़

गुजरात का एक पावन प्रसंग है।

एक भाई ने दो बीघा जमीन दी थी। उनका वह भूभाग चार बीघा था। वितरण के समय उन्होने वह पूरा दे दिया।

अधिक देने के कारण जो उत्साह आया, उस उत्साह में वे यो बोल उठे कि "यदि मेरी भूमि हरिजनो को दी जावे, तो इस गाँव में मेरी जितनी जमीन है, सब
तैयार हूँ।"

श्री नारायण देसाई ने वितरण स्थगित
को सोचने के लिए एक दिन का समय
सवेरे उस जमीन के लिए कुछ ग्राहक भी
दस हजार रुपये की बोली बोली
खुद भूमिवान थे, परंतु दाता की
इसलिए कानूनन वे जमीन खरीदने
रखते तो हम कुछ नही कर सकते
दोनो को समझाया गया। दोनो

दो बीघे के बदले पचास बीघा
भाई ने भी अपनी उस गाँव
जमीन दे दी। पहले दाता
बाकी जमीन गाँव के बाकी
वालो में जिनके पास कम
जिन्होने खरीदने का विचार
था, उन्हे भी दो-दो बीघा
भी कुछ जमीन रखी गयी।

[1]श्री नारायण भाई देसाई के

अधिक देन के कारण जो उत्साह आया, उस उत्साह में वे यो बोल उठे कि "यदि मेरी भूमि हरिजनो को दी जावे, तो इस गाँव मे मेरी जितनी जमीन है, सब देने के लिए तैयार हूँ।"

श्री नारायण देसाई ने वितरण स्थगित रखा और दाता को सोचने के लिए एक दिन का समय दिया। दूसरे दिन सबेरे उस जमीन के लिए कुछ ग्राहक भी मिल गये। प्राय दस हजार रुपये की बोली बोली जाने लगी। ग्राहक खुद भूमिवान थे, परतु दाता की जमीन को जोतते थे। इसलिए कानूनन वे जमीन खरीदने के हकदार थे और आग्रह रखते तो हम कुछ नही कर सकते थे। दाता और ग्राहक दोनो को समझाया गया। दोनो ने स्वीकार कर लिया।

दो बीघे के बदले पचास बीघा जमीन मिली। दूसरे एक भाई ने भी अपनी उस गाँव की बाकी बची हुई छह बीघा जमीन दे दी। पहले दाता की जमीन हरिजनो को दी गयी। बाकी जमीन गाँव के बाकी भूमि-हीनो को दी गयी। जोतने-वालो में जिनके पास कम जमीन थी, उन्हें भी दी गयी। जिन्होने खरीदने का विचार बिना किसी शर्त के छोड दिया था, उन्हें भी दो-दो बीघा जमीन दी और गोचर के लिए भी कुछ जमीन रखी गयी।[१]

[१] श्री नारायण भाई देसाई के पत्र के आधार पर।

प्रेम के प्रभावकारी विद्युत् कण

उस दिन दो सर्वस्वदानी गाँवों का वितरण बाबा के हाथों हो रहा था। एक-एक भूमि-पुत्र आता और अपने हिस्से की भूमि का प्रमाण-पत्र और प्रसाद ग्रहण करता। हरएक नाम के साथ यह भी बताया जाता कि आदाता के पास पहले जमीन थी या नही, थी तो कितनी थी और अब आवश्यकता के अनुसार उसे कितनी मिल रही है।

एक भाई के नाम के साथ सबने सुना :

इनके पास पहले चौबीस एकड थी। अब इन्हे साढ़े तीन एकड़ मिल रही है।

मानो, सारी सृष्टि का आशीर्वाद उस समय लोगो की हर्षध्वनि मे प्रकट हुआ। "आनदे हरि बोल" के जयनाद से वातावरण गूंज उठा। लेकिन नामो का सिलसिला तो जारी ही था। "इनके पास पहले कोई भूमि नही थी। इन्हे पॉच एकड़ भूमि मिली।" आनंद और सद्भावनाओं का सागर उमड़ पडा। उत्कल मे प्राय रोज ऐसा दृश्य प्रकट हो रहा है।

बाबा पूछते है :

"ऐसी शक्ति किस कानून मे है जो चौबीस एकड़वाले

को साढे तीन एकड स्वीकार करने के लिए राजी कर सके ?"

"सिवा प्रेम के कानून के ऐसा कोई कानून नही है, जिसम यह शक्ति हो ।"—विनोवा-वाणी ।

वावा आगे पूछते है

"अगर हाइड्रोजन वम से दुनिया का वातावरण विपाक्त हो सकता है, तो इस प्रेम की विद्युत्-भरी लहरो से दुनिया का वातावरण सद्भावना से ओतप्रोत क्यो नही हो सकता ?"

इसी श्रद्धा पर तो वावा के मुख से '५७ तक सर्वोदय की सार्वभौम सस्थापना की भविष्यवाणी प्रकट हुई है ।

७३

ग्रामदान की बाढ़

उत्कल के कोरापुट जिले की कहानी है ।

आज का पडाव कुटली नामक छोटे-से गाँव मे था । रास्ते पर स्वागत के लिए एक गाँव के लोग कीर्तन करते हुए आये । वावा ने नायक के कधे पर हाथ रखकर पूछा—"क्या ग्रामदान नही करोगे ?"

नायक ने सोचने का समय माँगा ।

कुटली पर सभी ग्रामवासी भाई-बहन स्वागत के लिए आये थे ।

यहाँ भी बाबा न 'ग्राम-दान' की बात समझायी ।

लोगों से पूछा—"क्यों, विचार पसंद है ?"

"जी, परतु हमारे नायक बीमार है ।"

"तो उन्हे हमारे प्रणाम कहना और हमारा सदेशा भी ाकर सुनाना कि बाबा ग्रामदान मॉग रहा है ।"

दोपहर मे कुटली के ग्रामवासी आकर ग्रामदान का निर्णय ुना गये ।

थोडी देर मे उस रास्तेवाले गाँव के लोग भी आये और ामदान का सकल्प सुनाया ।

थोडी देर मे श्री गोपबाबू एक कार्यकर्ता को बाबा के नेवास पर ले आये । ये भाई देहातो मे काम करने गये थे । गाठ जगह से 'ग्रामदान' ले आये है ।

"तो आज कुल दस हुए"—बाबा ने कहा ।

इतने मे गोपबाबू ने दूसरे कार्यकर्ता का जिक्र किया, वह भाई दस ग्रामदान लेकर आये थे । तो कुल बीस हुए ।

इतने मे मनमोहन चौधरी आये । जिलों से आयी हुई बाबा के नाम की ओड़िया डाक पढने लगे । कटक जिले के दो नये 'ग्रामदान' मिले थे ।

बालेश्वर मे भी बीस नये ग्रामदान मिले थे । इस पावन कहानी को सुनते हुए करुणामय भगवान् के चमत्कार से सबका हृदय गद्गद हो गया ।

ईसा ने ठीक कहा था—

"फसल तैयार है। कार्यकर्ता चाहिए।"

[पदयात्रा से आये हुए पत्र के आधार पर।]

७४

गंगोत्तरी-प्रेरक स्मरण

प्रथम दिन १८ अप्रैल को विनोबाजी के आवाहन पर सौ एकड का दान देने पर अब तक जो-जो पोचमपल्ली गये, किसी को श्री रामचन्द्र रेड्डी ने खाली हाथ नही लौटाया।

श्री जयप्रकाशजी गये, तो उन्हे भी भूदान दिया।

श्री केशवरावजी गये तो उन्हे भी खाली हाथ नही लौटाया।

जो भी उस गगोत्तरी के दर्शन को गया, कुछ-न-कुछ भूदान पाता रहा है।

करीब चार सौ एकड का दान रामचन्द्र रेड्डी ने कर दिया। अब उनके पास तरी की शायद पद्रह एकड और खुश्की की चौंसठ एकड भूमि बच रही है। इसी बीच पोचमपल्ली के नाम एक सदेश लेकर विनोबाजी के मत्री (लेखिका के पिता) वहाँ पहुँचे। अब सम्भव है उत्कल के बाद बाबा तेलगाना जावे। इस खयाल से पत्र मे कुछ विचार प्रकट किये गये थे।

नया सकल्प क्या किया जाय? रामचन्द्र रेड्डी सोचने

लगे। परन्तु विनोबा की ओर से संदेश आया है, तो कुछ संकल्प तो करना ही चाहिए।

उस दिन की सभा मे उन्होने घोषणा की .

"जिस दिन इस गॉव का ग्रामीकरण होगा, मै उसके लिए सदा तैयार रहूँगा। तब तक आज से मै अपने को अपने पास जो जमीन है, उसका ट्रस्टी मानता हूँ और उसकी आमदनी मे से पष्ठांश सम्पत्ति-दान मे देता रहूँगा।"

रामचन्द्र रेड्डी का निवेदन समाप्त नही हुआ था। क्षण भर रुककर उन्होने फिर घोषणा की—"और आज से मै अपना जीवन इस ग्राम की सेवा के लिए अर्पण करता हूँ।"

अपनी सहधर्मिणी की ओर उन्होने देखा, तो उस देवी ने खड़ी होकर सबको प्रणाम किया।

रामचन्द्र रेड्डी ने उनसे पूछा कि आपकी तैयारी भी ग्राम-सेवा करने की है ? तो उन्होने भी अपनी स्वीकृति प्रकट की।

ग्रामवासियों मे पुन. एक बार नव चेतन निर्माण हुआ। वड़े-बड़े जितने भूमिवान है, उनमे से अधिकांश ने अपना षष्ठांश लिख दिया और सारे गाँव का षष्ठाश जुटाने मे वडे भूमिवान प्रयत्नशील हो गये।

विनोबाजी को उनके स्वागत मे पुरुपसूक्त सुनानेवाले शास्त्रीजी भी आये। उस बार उन्होंने केवल श्रीफल—नारियल ही विनोवाजी को अर्पण किया था।

कर तिरस्कृत कर रखा था, उनके हृदय मे उन्होने ऊँचा स्थान पा लिया था । उनके सेवा-सातत्य ने उन पीडित दुखी मानवों में जीवन क्राति कर दी थी ।

लेकिन भूदान की रणभेरी ने उन्हे अपनी उस सुदीर्घ साधना से विचलित किया ।

विनोवाजी से आकर वे मिले और अपना सारा समय भूदान के काम में लगाने का निश्चय कर गये ।

बोधगया

विनोवा अपने कमरे मे एकाकी बैठे थे । महाराज भीतर आये और नम्रतापूर्वक निवेदन किया—"मै सोचता था कि मुझे जीवनदान देना चाहिए या नहीं । क्योकि अब नया सकल्प तो कुछ करना था ही नही । जीवन तो कब का दिया ही जा चुका है । फिर भी देखता हूँ कि इस कल्पना मे बड़ा जीवन भरा हुआ है । जब से जीवन-दान का चिंतन मन में चल रहा है, वृद्धावस्था का विस्मरण हो गया है । तरुणाई का अनुभव कर रहा हूँ । जीवनदान का सकल्प वड़ा चैतन्य-दायी प्रतीत होता है । अत. मेरा भी जीवनदान स्वीकार कीजिए ।"

विनोबाजी ने अनेक वार इस पावन और प्रेरक प्रसंग का जिक्र किया है ।

इस वार उनके सेवक द्वारा उनके पास अपनी अडतालीस एकड का षष्ठाश आठ एकड का दान-पत्र प्रेषित किया।

० ० ०

प्रथम दाता, अन्य ग्रामवासी भूमिवान, सवने अपना योग दिया। अव भूमिपुत्रो की वारी आयी। वे क्या देगे?

उनसे भी भाऊ ने एक माँग की। "आप लोग भी मुझे दान दे सकते है। आपकी मर्यादा के भीतर है।"

"अगर हमारे वश की वात हो तो वताइये।"

"आपने अभी तक ताडी, शराव का व्यसन छोडा नही है। आज मुझे अपने व्यसन का दान दे दीजिये।"

भूमिपुत्रो ने प्रतिज्ञा की कि आज से ताडी-शराव नही पीयेगे।

ठेकेदार ने अपनी दूकान वहाँ से उठा ली। सरकार ने भी उसे ठेके की शेष वची हुई रकम मुआफ कर दी। भूदान की गगोत्तरी का स्मरण इस तरह अधिकाधिक प्रेरक होता जा रहा है।

७५

महाराज के तीन कदम

चांडिल

उनका सारा जीवन गुजरात के सर्वहाराओ की सेवा मे वीता था। जिनको समाज ने चोर, डकैत आदि समझ-

कर तिरस्कृत कर रखा था, उनके हृदय मे उन्होने ऊँचा स्थान पा लिया था। उनके सेवा-सातत्य ने उन पीड़ित दुखी मानवों में जीवन क्राति कर दी थी।

लेकिन भूदान की रणभेरी ने उन्हे अपनी उस सुदीर्घ साधना से विचलित किया।

विनोबाजी से आकर वे मिले और अपना सारा समय भूदान के काम मे लगाने का निश्चय कर गये।

बोधगया

विनोबा अपने कमरे मे एकाकी बैठे थे। महाराज भीतर आये और नम्रतापूर्वक निवेदन किया—"मै सोचता था कि मुझे जीवनदान देना चाहिए या नही। क्योंकि अब नया सकल्प तो कुछ करना था ही नही। जीवन तो कब का दिया ही जा चुका है। फिर भी देखता हूँ कि इस कल्पना मे बड़ा जीवन भरा हुआ है। जब से जीवन-दान का चितन मन में चल रहा है, वृद्धावस्था का विस्मरण हो गया है। तरुणाई का अनुभव कर रहा हूँ। जीवनदान का सकल्प बड़ा चैतन्य-दायी प्रतीत होता है। अतः मेरा भी जीवनदान स्वीकार कीजिए।"

विनोबाजी ने अनेक बार इस पावन और प्रेरक प्रसंग का जिक्र किया है।

पुरी

आवाहन का प्रस्ताव स्वीकृत हो चुका था। सेवक लोग बिदा लेकर यथास्थान लौट रहे थे। एक वृद्ध तरुण विनोवाजी से बिदा लेने आये। उनके मुखमडल पर चिरहास्य झलक रहा था। सम्मेलन के सभापति का वोझ कधे से उतर जाने के कारण वे और भी मुक्त-मन दिखाई दे रहे थे और किसी कृतविश्वास की झाँकी भी चेहरे पर साफ प्रकट हो रही थी। सदा की भाँति उन्होने नम्र निवेदन शुरू किया :

"दो बरस तक अब पैदल ही घूमने की प्रेरणा होती है। १३ अप्रैल से प्रारभ करना ठीक होगा। बोधगया में जीवनदान के कारण जिस तरुणाई का अनुभव हुआ, उसमें इस आवाहन के कारण और भी उत्साह भर गया है। आपका आशीर्वाद चाहिए।" हिमालय और सागर परस्पर मिल रहे थे।

. ७६ .

दो महान् समर्पण

डा० प्यारेलाल सिह

उस दिन उनकी चार सौ मील की पदयात्रा समाप्त हुई थी। अपनी पैंसठ वर्ष की आयु मे भी वे प्रतिदिन पद्रह से बाईस मील तक चलते।

सवेरे उनकी छाती में थोड़ा दर्द होने लगा। दादाभाई ने उन्हे आगे चलने से रोका, परंतु ठाकुर साहब का मन माननेवाला नही था। दादाभाई ने आगे कूच किया। अनुष्ठान को वीच ही मे कैसे छोड़ दिया जाय ? साधना को खडित कैसे किया जाय ? वे पीछे नही रुक सके।

उस दिन जिला सम्मेलन का आयोजन भी था। भूदान-मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिसक क्राति पर वे डेढ घटा बोलते रहे। सायकाल कार्यकर्ताओ के साथ होनेवाली चर्चा में भी भाग लिया। परस्पर परिचय के कार्यक्रम मे हिस्सा लेते हुए कहा . "देखिये, लोग मुझे व्यर्थ ही वृद्ध कहते है। कहते है कि इसे हृदय-रोग हो गया है। लेकिन मै अभी भी बाईस मील चल सकता हूँ। नौजवान लोग थक रहे है, लेकिन मुझे कोई थकावट नही है।"

परतु, भगवान तो उन्हे चिर-विश्राम देना चाहते थे।

रात के नौ बजे वे विस्तर पर लेटे। पौने दस बजे हृदय मे पीडा प्रारंभ हुई। डाक्टर के लिए फौरन मोटर भेजी गयी। परतु सम्मेलन का स्थान पाँच मील दूर था। डाक्टर समय पर नही पहुँच सके। पहुँचते भी तो वे विधि-विधान को कैसे टाल सकते थे ?

साढ़े दस बजे ठाकुर साहब की पदयात्रा की पूर्णाहुति उनकी देह-यात्रा की पूर्णाहुति से हुई। आखिरी क्षण तक

उनके मुख से रामनाम का उद्घोष जारी था। मृत्यु के समय भी उनका मुख अत्यंत शात और प्रसन्न था। उन्होंने मृत्यु को भी वरदान मे बदल दिया।

ठाकुर साहब ने भूदान-यज्ञ मे अपनी आहुति समर्पण करना पसद किया, लेकिन जो कदम उठाया था, उसे पीछे हटाना पसद नही किया।

भूदान-यज्ञ-आदोलन से वे दिन प्रतिदिन अधिकाधिक तद्रूप होते जा रहे थे।

विरोधी दल के नेता होते हुए भी उन्होने काग्रेस के तथा अन्य पक्षो के नेताओ के साथ सच्चे हृदय से सहकार्य किया, जिसके लिए उनके पक्ष के मित्रो ने भी उनका विरोध किया। परतु उन्होने वह सब प्रेमपूर्वक बर्दाश्त किया। सबके साथ स्नेह-भरा व्यवहार किया। भूदान-यज्ञ-आदोलन के कारण वे पक्षनिष्ठ और प्रतीकारात्मक प्रवृत्तियो से ऊपर उठकर लोक-निष्ठ और क्राति के सदेश-वाहक बन गये थे। और इस तरह वे जनता के हृदयो मे मानवता के महान् मूल्यों का बीजारोपण करते हुए आगे बढे जा रहे थे कि इसी बीच आत्मोत्सर्ग हो गया।

सम्मेलन का उद्घाटन इस महान् समर्पण-योग से हुआ। भूदान-यज्ञ अमर हुआ।

श्री शान्ता बहन डोंगरे

अपना अध्ययन समाप्त करने पर श्री शांता बहन ने फौरन सेवा के क्षेत्र मे प्रवेश करने का संकल्प किया। अकोला के "महिला-मडल" मे वे काम भी करने लगी। उन्ही दिनों अकोला जिले मे श्री शंकरराव देव की पदयात्रा का आरभ हुआ था। 'महिला-मडल' की उदासीनता ने शाता वहन को गहरा आघात पहुँचाया। उन्होंने स्वयं भूदान मे कूद पड़ने का निश्चय किया। इस समय उनकी उम्र वाईस वर्ष की थी।

शांता वहन का स्वास्थ्य वचपन से ही काफी कमजोर था। वारह वर्ष की आयु तक तो वे केवल दुग्धाहार पर ही रही। चाँदी की सुन्दर झारी मे उनके लिए स्कूल मे ही दूध पहुँचाया जाता था। अध्ययन-काल मे वे मोटर मे या किसी-न-किसी वाहन मे ही स्कूल-कॉलेज जाती। ऐसी ये शान्ता वहन पद-यात्रा मे कैसे टिकेगी? सवको वड़ा संदेह था। लेकिन उनका सकल्प दृढ था। भूदान-यज्ञ के आवाहन के सामने उन्होंने दूसरी सव वातों को गौण माना।

एक वर्ष उन्होंने बिहार में काम किया। दो माह हम दोनों ने गया मे साथ-साथ पदयात्रा की। इस यात्रा मे उनकी नम्रता, विद्वत्ता, परिश्रमशीलता और कार्यकुशलता ने मुझे उनकी ओर अधिकाधिक आकर्षित किया। उम्र में मैं उनसे

छह वर्ष छोटी थी। लेकिन वे मुझे अपनी बराबरी का मानती थी। हम दोनो में बहनो का-सा स्नेह था। मित्र की तरह वे मुझसे सलाह-मशविरा करती। मुझसे बडी होने पर भी, क्योकि भूदान-आरोहण के साथ प्रारभकाल से ही मै सबधित थी, वे हर पहलू पर मेरे साथ काफी विचार-विनिमय करती। वे मेरे सुझावो की कद्र करती, उन्हे महत्त्व प्रदान करती। उनकी इस उदारता और महानता के कारण मै सकोच से कुछ दब भी जाती, लेकिन प्रेम के सामने मै हार जाती।

बोधगया-सम्मेलन के बाद वे कुछ दिन पूज्य विनोबाजी के सत्सग मे भी रही। इस बीच उन्होने कार्यभार भी काफी सँभाल लिया। प्रवचनो का लेखा, उनका प्रकाशन, पत्र-व्यवहार, मुलाकाते, कार्यकर्ताओ से चर्चा, स्त्रियो की सभाओ में तथा कभी-कभी प्रार्थना-सभाओ मे भी, लोगो को विचार समझाना आदि काम वे आत्म-विश्वास के साथ करने लगी। विनोबाजी के चरणो के पास बैठकर वे नित्य नूतन प्रेरणा पाने लगी।

इसी बीच अपनी माताजी की बीमारी के कारण उन्हे कुछ दिनो के लिए घर आना पडा। सेवा की आवश्यकता समाप्त होते ही वे पुन पदयात्रा में जुट गयी। वे ठाकुर प्यारेलाल सिह तथा दादाभाई नाइक के यात्री-दल के साथ हो गयी। बहुत आग्रह करने पर भी वे कभी भाषण नही

करती। दादाभाई के काम मे पूरी तरह मदद करना ही उन्होने अपना कर्तव्य समझा। बहुत कहने पर भी वाहन का उपयोग कभी नही करती। -

लेकिन ठाकुर साहब के आत्मोत्सर्ग के बाद उन्होने फौरन अपनी जिम्मेदारी महसूस की। अब वे सभाओं मे बोलने लगी। कार्यकर्ताओ के साथ सम्पर्क कायम करने लगी। योजनाएँ बनाने लगी। बिलासपुर-सम्मेलन के लिए उन्होने एक ठोस योजना भी बना ली थी। इस सम्मेलन के बाद यात्री-दल का सचालन अब वे ही करनेवाली थी। अपनी हार्दिकता के कारण वह दिन प्रतिदिन सबको अधिकाधिक प्रिय होने लगी।

लेकिन परमेश्वर को शायद वे बहुत अधिक प्रिय हो चुकी थी और शायद इसीलिए केवल बारह घटे की बीमारी के बाद वे प्रभु के पास पहुँच गयी। अत तक प्रसन्न-चित्त रही। एक ही भावना थी—भूदान-यज्ञ सफल बने।

अरपा नदी मे शाता बहन का पार्थिव अर्पित हुआ। भूदान-यज्ञ के अनुष्ठान मे एक महान् आहुति का समर्पण हुआ। शाता बहन अमर हुई—भूदान अमर हुआ।

पू० विनोबाजी ने ठाकुर साहब और शाता बहन के सबध मे श्री दादाभाई को जो पत्र लिखा, वह इस प्रकार है

"दादाभाई,

ठाकुर प्यारेलाल सिह और शाता डोगरे दोनो ने अपनी काया कृतार्थ की। परमेश्वरी पथ के पथिक रुग्ण शय्या में नही मरे। देह कैसी सहज ही छोड दी, मानो वृक्ष से फल टूट पडा हो। हमारे लिए परमेश्वर का यह बहुत बड़ा आश्वासन है। इन घटनाओ से हमारे हृदय की श्रद्धा और पाँवो का बल बढा है। आपकी सहधर्मिणी ने भी आपको इस परिस्थिति मे भी यात्रा जारी रखने की सलाह दी। परमेश्वरी प्रेरणा कैसे काम करती है, इसका यह सकेत है। हम अहता त्यागकर निमित्तमात्र बनें।

अतर का निर्मल, वाणी में मधुर, पांवो से मजबूत, परमेश्वर का पथिक सतत घूमता रहे। उसके आगे-पीछे भगवान् खडे है।

विनोबा के प्रणाम।